।। श्री गोभ्यः नमः ।।

हिन्दी मासिक

कामधेनु-कल्याण

फरवरी-2012

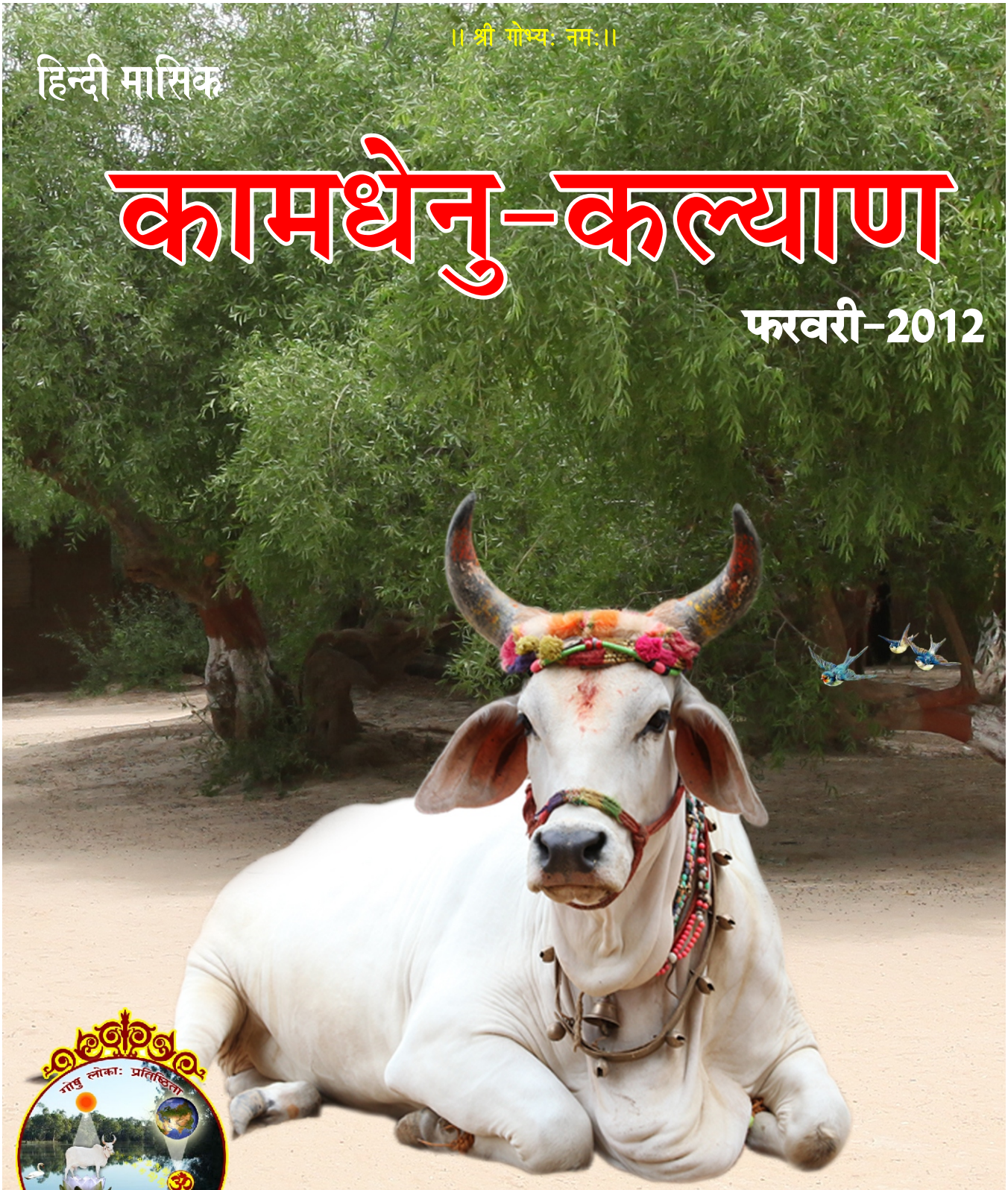

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन, पथमेड़ा

वर्षः 6

अंक :8

Web. www. Pathmedagodarshan.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

सुरभि उवाच

हे प्रिय गोवत्सों, गोसेवा परायण नर-नारियों,

मेरा अनन्त आशीर्वाद।

''कलियुग ने अपना पूरा ध्यान मेरे सहित अखिल गोवंश को नष्ट करने में लगा रखा है और जिन मनुष्यों को मैनें दूध पिलाकर पुष्ट किया वे ही कलियुग का साथ दे रहे हैं। यह देख मुझे दु:ख होता है परन्तु माँ होने के नाते मौन हूँ।

आज भी मेरे कुछ पुत्र मेरी आवाज बनकर इस विश्व को गोमय बनाने का सुन्दर रचनात्मक प्रयास कर रहे हैं, उसी रचनात्मक सेवा का एक सुन्दर प्रकल्प मेरे सभी लाड़ले 'गोवत्स संत'' मेरे प्रिय गोपाल की पावन लीला भूमि जहाँ पर ब्रह्म ने गोवत्स-गोपाल बनकर मेरी सेवा करी और सम्पूर्ण त्रिलोक में मेरी महिमा प्रकाशित करी ऐसी ब्रज भूमि पर करने जा रहे हैं।

ब्रज भूमि का एक महत्वपूर्ण भाग काम्य वन है जिसे 'आदि वृन्दावन' कहा जाता है । मेरे गोपाल ने सभी तीर्थो को यहाँ बुलाया है, अब वो पुन: मुझे बुला रहा है, वो चाहता है कि संतों द्वारा स्थापित ''ब्रज गोअभ्यारण्य'' जड़खोर में मैं अपनी महिमा सहित गोवंश के साथ रहूँ। यह पावन स्थान मेरे स्वतन्त्र भ्रमण हेतु भी अनुकूल है तथा गोपाल की इच्छानुसार अब मेरा स्वरूप गोवंश जहाँ बिराजेगा व मेरी कृपा शक्ति का यहाँ से भी अब प्रकाश फैलेगा। गोपाल के सम्पूर्ण ब्रज मण्डल का गोवंश सुखी व सुरक्षित हो यही इस स्थान का और संतों का प्रयास होगा। संतों की यही भावना गो-ब्रजयात्रा मैं प्रकट होगी।

आयोजित होने वाली इस ''ब्रज गोयात्रा'' में मैं मेरी सभी शक्ति रुपा गैय्या व गोवत्सों के साथ रहुँगी व यात्रा में जुड़े हुए भक्तों को अपने गो गव्य व आशीर्वाद से पुष्ट करुंगी, उनके जीवन को धन्य करुंगी।

मेरे गोपाल ने द्वापर युग में मुझे पूरे ब्रज का दर्शन कराया था। आज कलियुग में वो ही गोपाल संतों के रूप में मुझे पुन: ब्रज दर्शन कराएगा। मैं आ रही हूँ बेटा, तुम भी जरूर आना और जो कुछ में दूँगी वो तुम्हारे लिए अमोघ होगा।

माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः6 **dke/ku&dY;k.k** अंकः8

वि.सं. पोष कृष्ण पक्ष 2068 फरवरी – 2012

अनुक्रमणिका

1. ***सम्पादकीय*** 2
2. ***साधक संजिवनी*** ❖ *सेवा सम्बन्धि मार्मिक बात* 4
3 ***श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद*** ❖ *परम भागवत* ***गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी*** *महाराज के प्रवचन (गोवत्सव पाठशाला– 2011)* 5
4. ***गोभागवत कथा–2010*** ❖ *परम पूज्य द्वाराचार्य* ***श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी*** *महाराज* 10
5. ***बालक अंक*** ❖ ***पाँच पितृभक्त बालक*** 15
6. ***गोमहिमा*** ❖ ***द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज*** *(भारतीय गोकल्याण महामहोत्सव– 2011)* 17
7. ***सुरभि शतकम् (पं. श्रीरामस्वरूपजी पांडे)*** 21
8. ***श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद*** 22
9. ***गोअंक*** ❖ *गोभक्त रामसिंह* 25
10. ***गोमूत्रमाहात्म एवं गोमयमाहात्म*** *(पं. गंगाधरजी पाठक)* 27
11. ***संस्था समाचार*** ❖ *''श्रीब्रज चौरासी कोस गो–यात्रा'' 9 फरवरी को यमुना महारानी के दिव्य एवं भव्य पूजन के साथ यात्रा का होगा शुभारम्भ।*❖*गो साहित्य सृजन हेतु विशेष निवेदन* 30
12. ***व्रत पर्वोत्सव अंक*** ❖ *भीष्माष्टमी* 33
13. ***कविता*** 34

स्वर्गस्य सोपानपदेऽस्तिसंस्थिता हविः प्रदानैः सुरपौषिणीयम्।
मांगल्यमूर्तिः शुचिताविधात्री व्यासेन यस्याः भणिता प्रशस्तिः।।२२।।

इसकी सेवा से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इसके द्वारा प्राप्त हव्यगव्यों से देवताओं की तृप्ति होती है। यह मांगलिक कार्यो में तथा पवित्रता में सहयोग देने वाली है। ऐसा महर्षि व्यास ने कहा है।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org
Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

lEikndh; irk
श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041
Ph.02979-287102-09
Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक
पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''
Mob.9414154706

lEiknd
स्वामी ज्ञानानन्द
eY;&10 #i;k

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

सेवा सम्बन्धी मार्मिक बात

साभारः- साधक संजिवनी

सेवा वही कर सकता है, जो अपने लिये कभी कुछ नहीं चाहता। सेवा करनेके लिये धनादि पदार्थोंकी चाह तो कामना है ही, सेवा करने की चाह भी कामना ही है; क्योंकि सेवाकी चाह होनेसे ही धनादि पदार्थोंकी कामना होती है। इसलिये अवसर प्राप्त हो और योग्यता हो तो सेवा कर देनी चाहिये, पर सेवाकी कामना नहीं करनी चाहिये।

दूसरे को सुख पहुँचाकर सुखी होना, 'मेरे द्वारा लोगोंको सुख मिलता है'- ऐसा भाव रखना, सेवाके बदलेमें किंचित भी मान-बड़ाई चाहना और मान-बड़ाई मिलनेपर राजी होना वस्तवमें भोग है, सेवा नहीं। कारण कि ऐसा करनेसे सेवा सुख-भोगमें परिणत हो जाती है अर्थात् सेवा अपने सुखके लिये हो जाती है। अगर सेवा करनेमें थोड़ा भी सुख लिया जाय, तो वह सुख धनादि पदार्थोंमें महत्व बुद्धि पैदा कर देता है, जिससे क्रमशः ममता और कामनाकी उत्पत्ति होती है।

'मैं किसीको कुछ देता हूँ' - ऐसा जिसका भाव है, उसे यह बात समझमें नहीं आती तथा कोई उसे आसानीसे समझा भी नहीं सकता कि सेवामें लगनेवाले पदार्थ उसके हैं, जिसकी सेवा की जाती है। उसीकी वस्तु उसे ही दे दी, तो फिर बदलेमें कुछ चाहनेका हमें अधिकार है क्या है? उसीकी धरोहर उसीको देनेमें एहसान कैसा? अपने हाथोंसे अपना मुख धोनेपर बदलेमें क्या हम कुछ चाहते हैं?

शंका- सेवा तो धनादि वस्तुओंके द्वारा ही होती है। वस्तुओंके बिना सेवा कैसे हो सकती है? अतः सेवा करनेके लिये भी वस्तुओंकी चाह न करनेसे क्या तात्पर्य है?

समाधान- स्थूल वस्तुओंसे सेवा करना तो बहुत स्थूल बात है। वास्तवमें सेवा भाव है, कर्म नहीं। कर्मसे बन्धन और सेवासे मुक्ति होती है। सेवाका भाव होनेसे अपने पास जो वस्तुएँ हैं, उन्हीं से पूर्ण सेवा हो जाती है; इसलिये और वस्तुओंको चाहनेकी आवश्यकता ही नहीं है।

वास्तविक सेवा वस्तुओंमें महत्वबुद्धि न रहनेसे ही हो सकती है। स्थूल वस्तुओंसे भी वही सेवा कर सकता है, जिसकी वस्तुओंमें महत्वबुद्धि नहीं है। वस्तुओंमें महत्वबुद्धि रखते हुए सेवा करनेसे सेवाका अभिमान आ जाता है। जबतक अन्तःकरणमें वस्तुओंका महत्व रहता है, तबतक सेवकमें भोगबुद्धि रहती ही है, चाहे कोई जाने या न जाने।

वास्तवें सेवा भावसे होती है, वस्तुओंसे नहीं। वस्तुओंसे कर्म होते हैं, सेवा नहीं। अतः वस्तुओंको दे देना ही सेवा नहीं है। वस्तुएँ तो दूकानदार भी देता है, पर साथमें लेनेका भाव रहनेसे उससे पुण्य नहीं होता। ऐसे ही प्रजा राजाको कर-रूपसे धन देती है, पर वह दान नहीं होता। किसीको जल पिलानेपर 'मैंने उसे जल पिलाया, तभी वह सुखी हुआ।'- ऐसे भावका रहना दूकानदारी ही है। हम मान-बड़ाई नहीं चाहते, पर 'जल पिलानेसे पुण्य होगा' अथवा 'दान करनेसे पुण्य होगा'- ऐसा भाव रहनेपर भी फलके साथ सम्बन्ध होनेके कारण अन्तःकरणमें जल, धन आदि वस्तुओंका महत्व अंकित हो जाता है। वस्तुओंका महत्व अंकित होनेपर फिर वास्तविक सेवा नहीं होती, प्रत्युत लेनेका भाव रहनेसे असत्के साथ सम्बन्ध बना रहता है, चाहे जानें या न जानें। इसलिये वस्तुओंको दूसरोंकी सेवामें लगाकर दान-पुण्य नहीं करना है, प्रत्युत उन वस्तुओंसे अपना सम्बन्ध तोड़ना है।

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

(गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

त्वं माता सर्वदेवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्वतीर्थानां नमस्तेऽस्तु सदानघे।।

हमें लगा कि सत्संग का और सत्पुरुषों के सान्निध्य का सुवसर लम्बे समय तक सब को प्राप्त नहीं होता है। इसलिये हमको धर्म शास्त्रों का संग्रहण करना चाहिए और उनको अपना साथी बनाना चाहिये। चौबीस घण्टे में जब भी समय मिले तब और कुछ नियमित भी प्रातःकाल भगवन्नाम जप, गीता या रामायण का पाठ नियमित होता रहे और इसके अलावा जब भी अनुकुल समय हो तब, जिन्होंने उसे जीवन में जिया है, जिन्होंने अनभुव किया है, ऐसे महापुरुषों के द्वारा इन धर्मशास्त्रों पर की गयी व्याख्याओं का स्वाध्याय करना चाहिये। ऐसे पुरुषों के द्वारा प्रस्तुत किया गया विषय हमें पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त होता है। उसमें गीताप्रेस से प्रकाशित किसी भी पुस्तक को आप पढ़ें तो आपके चित्तमें भटकाव नहीं होगा। मानव सेवा संघ की पुस्तकें अच्छी है पर उनका स्तर कुछ ऊँचा है ऐसा सभी लोग कहते हैं। स्वामी शरणानन्दजी के वक्तव्य का संकलन करके फिर उनका प्रकाशन हुआ था। बहुत ही अद्‌भुत दर्शन है वो, सम्पूर्ण विश्व में मानव के लिये एक भविष्य की दिशा को निर्धारित करने वाला है और विश्व बन्धुत्व सबके अन्दर जगाने वाला दर्शन है, पर यह पत्ता नहीं काल क्या चाहता है? उस वाणी का अभी तक इतना प्रचार नहीं हो पा रहा है ! उस वाणी के आधार पर हमारे बहुत सारे वक्ता बहुत सी अच्छी-अच्छी बातें कहते हैं। उस महापुरुष का यह कहना भी था कि यह वाणी अविनाशी है संत वाणी है। इसके ऊपर किसी व्यक्ति का नाम लगाना इसके प्रति, सत्य के प्रति अन्याय होगा। इसलिये यह आवश्यक नहीं कि यह कहें कि साहब स्वामी शरणानन्दजी महाराज ने यह कहा, यह वाणी लोगों तक पहुँचनी चाहिए।

तो हम निवेदन कर रहे थे कि स्वाध्याय के लिये बहुत बढ़िया-बढ़िया ग्रन्थ गीता प्रेस से, मानव सेवा संघ से प्रकाशित हैं तथा और भी कई अपने-अपने स्तर पर कई लोगों ने धर्मशास्त्रों पर अनेक तरह की व्याख्याएँ की हैं। उन व्याख्याओं में उन-उन व्यक्तियों का जो अहम् है वह और वो लोग जिस परम्परा से आराधना करते हैं, जिस सम्प्रदाय से उनका सम्बन्ध होता है, उसका प्रभाव उन व्याख्याओं में रहता है। अभी जो हमने गीताप्रेस और मानव सेवा संघ के साहित्य की बात की उनमें कोई व्यक्ति, कोई पंथ, कोई सम्प्रदाय की बात नहीं बल्कि शुद्ध सनातन धर्म और संत वाणी, वेद वाणी और गुरु वाणी का प्रचार है इसमें। वहाँ कहीं भटकाव नहीं है, वहाँ कहीं अवरोध नहीं है। व्यक्ति भी सीमित होता है, सम्प्रदाय भी सीमित होते है, पंथ भी सीमित होता है पर जो संत वाणी, गुरुवाणी और वेद वाणी है वो असीम है और सर्वकाल, सब जगह और सब समय में सब के लिये है। किसी एक के लिये नहीं उन तीनों में से किसी एक को आधार बनाकर! परमात्मा जो है भगवान है, गोमाता है यह बुद्धि से अतीत है।

बुद्धि प्रकृति का अंश है। अपने अधीन आने वाली वस्तुओं को तो बुद्धि समझ सकती है पर उसके आगे जो हैं उनको बुद्धि नहीं समझ सकती। इस कारण उनके लिये हमें हृदय का साहरा लेना पड़ता है। सत्य को, भगवान को, गोमाता को, संत को समझने के लिये हृदय का सहारा लेना पड़ता है। विश्वास हम वेदवाणी, गुरुवाणी और संतवाणी पर ही कर सकते हैं। जिस वाणी में कहीं किसी भी तरह की सीमा नहीं है और कोई व्यक्ति की छाप नहीं है सार्वभोम सर्वकाल वह वाणी विश्वसनीय है।

इन तीनों में से किसी एक वाणी पर विश्वास हमें करना होगा। जब विश्वास करके उसमें उतरेंगे तो उसकी अनुभूति होगी और वो अनुभूति फिर मन में, चित्त में, शरीर में, सब में आयेगी। इन सबसे आगे जो विश्वास , आस्था और श्रद्धा की बात हमारे चली थी। आज जो बात सुनी थी वह बात संतवाणी के आधार पर गई थी। तो वहाँ से हम लोग शुरू करें। आज का विषय हमारा स्वास्थ्य था। हम स्वस्थ रहना चाहते हैं, पर केवल शरीर से स्वस्थ रहना ही स्वस्थ रहना नहीं है। मन भी स्वस्थ हो और मस्तिष्क भी स्वस्थ हो। मन स्वस्थ होगा तो हमारी भावनाएँ, हमारी कल्पनाएँ परिमार्जित होगी। अपने लिये और दूसरों के लिये हितकारी होगी। बुद्धि स्वस्थ होगी तो हमारी निर्णय करने की क्षमता और अच्छी रहेगी। हर परिस्थिति में, प्रतिकूल से प्रतिकूल और अनुकूल से अनुकूल परिस्थिति में हम तत्काल निर्णय कर सकेंगे कि अब हमें क्या करना है। अगर यह अस्वस्थ रहे तो कई बार हम निर्णय नहीं कर पाते हैं कि अब हम क्या करें और बस वहीं पर धोखा हो जाता है।

तो तीनों ही स्वस्थ रहे। तन भी स्वस्थ रहे, मन भी स्वस्थ रहे और बुद्धि भी स्वस्थ रहे। इन तीनों को स्वस्थ रखने के लिये सबसे पहली बात तो यह है कि कोई बीमारी होने के बाद औषधि देना यह कोई समझदारी नहीं है। यह तो आपत्त धर्म है। समझदारी तो यह कि बीमारी हो ही ना, रोग हो ही ना। रोग होने के बाद उपचार करना हमारे आरोग्य शास्त्र का लक्षण नहीं है, रोग हो ही नहीं ऐसा बताता है सनातन का आरोग्य शास्त्र तो। बीमारी ना हो उसके लिये हमारे उत्तमजी आपको प्रतिदिन सुनाते ही हैं कि प्रातःकाल ऐसे जल पियो, सांय को भोजन से पहले जल पिओ, सोते समय पिओ, दूध में घी डालकर पिओ, आहार कैसा लेना चाहिए और किस तरह लेना चाहिए, किस समय लेना चाहिए फिर कितनी मात्रामें लेना चाहिए यह सारा उत्तमजी समझाते हैं और रहा होगा तो आपको अगले दिन बता देंगे।

आहार पर ध्यान दें। आहार शुद्ध हो, स्वस्थ हो, पवित्र हो और फिर वह कब लेना कितना लेना और कैसा लेना? पवित्र हो, सात्विक हो या बिना समय में अधिक मात्रा में या कम मात्रा में लेते हैं, जितना लेना चाहिए उतना ही लेना चाहिए। तो यह बहुत लम्बे समय तक, हम अपनी बात नहीं बता रहे पर याद आ गया, ऐसा ही भाव आया कि थोड़ा सा तो काम करते नहीं तो बिना मेहनत का खाना अपराध है। फिर भजन करेंगे तो भगवान भी कैसे प्रसन्न होंगे? उस समय ऐसा भी मन में आता था कि कोई ऐसी जगह हो जहाँ गोमाता भी हो, संत भी हो तो थोड़ी सेवा करलें तो ऊपर कर्जा न चढ़े पर ऐसा अवसर नहीं मिल पाया। आठ-नौ वर्ष का यह समय था, जब कोशिश करने पर भी नहीं मिल रहा था। कहीं-कहीं तो मिल जाता था पर कहीं किसी कारण से आगे जाना होता था तो उस

समय हमने आहार की मात्रा कम कर ली। ना ही किसी आरोग्य शास्त्री को पूछा और ना किसी साधक को, किसी को पूछा ही नहीं। उससे बड़ा नुकसान हुआ शरीर को। उसका पता लगा हमें १९९० के आस-पास। १९९० के आस-पास रामकुमारजी जालान करके गीताप्रेस से जुड़े हुए साधक हैं, दिल्ली में रहते हैं। उनको स्वामीजी ने कहा कि इनका स्वास्थ्य परीक्षण कराओ। नानाजी भी साथ थे। उसमें बताया कि दोनों गुर्दे समाप्त हो गये हैं। कभी अच्छा जल भी नहीं पिया। पता नहीं, याद आया तो पी लिया नहीं तो जल भी नहीं पिया। थोड़ा दूध लेते थे इसके लिये एक गिलास थी हमारे पास और फिर वो गिलास भी एक दिन केदारजी में एक नदी ले गई। पानी भरने गये थे, तो तेज आ रहा था हाथ में से छूट गयी तो चली गई। वो गिलास हमारे साथ आठ साल रही थी। एक कम्बल और गिलास काफी लम्बे समय तक साथ रहे थे।

तो हम यह कहने जा रहे थे कि भाव में या मन-माने ढ़ंग से आहार का निर्णय नहीं करना चाहिए। प्रकृति का परीक्षण कराके हमारी प्रकृति कैसी है, उस अनुसार कैसा और कितनी मात्रा में आहार लेना चाहिये, यह निर्णय करना चाहिये। आरोग्य शास्त्र में सब चीजें हैं, पर हमने तो देखी नहीं थी, हमने तो शास्त्र पढ़ा ही नहीं था। बाद में तो शास्त्र सुने -पढ़े पर उस समय तो वैसे ही थे। पाँच वीं कक्षा पास करके स्कूल से ही भाग गये थे। बनारस पढ़ने। इसलिये, पाँचवीं तक तो आरोग्य शास्त्र आया नहीं तथा और कोई अवसर इस तरह का पढ़ने को मिला नहीं। तो ऐसे ही निकल गये थे। अभी हम यह निवेदन कर रहे थे कि हम आहार में सावधानी रखें। सात्विकता के साथ-साथ उसकी मात्रा और समय दोनों का ध्यान रखना चाहिये। सात्विक आहार, मात्रा और समय की तो लोग खूब चर्चा करते हैं, आहार सात्विक और शुद्ध स्वस्थ कैसे प्राप्त हो, इस पर चर्चा नहीं होती।

इसलिये आज हमारे इसी की चर्चा करने का सत्र है। वैसे अब १५ मिनट और बोलेंगे। तो एक चीज तो यह थी कि बीमारी ही ना हो और बीमारी कैसे ना हो, अगर हमारा आहार और विहार व्यवस्थित है तो बीमारी नहीं होगी और विहार भी तभी व्यवस्थित होगा जब हमारा आहार व्यवस्थित होगा। आहार शुद्ध और सात्विक होगा तो फिर उठना, बैठना बोलना, करना सब ढ़ंग से आ जायेगा। कल भी आपको हमने बताया था कि १६ वीं शताब्दी के बाद और १७ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जो घटना घटी है उसके बारे में हम आप बतायें व इतिहास को देखें। ऐसी आज एक बात हम बताने जा रहे हैं कि इस समय भारत वर्ष में जहाँ हमने भ्रमण किया है, वहाँ हमने तीन स्थान ऐसे देखे हैं जहाँ के लोग केवल गाय का दूध ही पीते हैं और उनको अन्न भी गाय के गोबर की खाद से उत्पादित ही मिलता है। उनमें एक तो थार क्षैत्र है, बाड़मेर जिले का कुछ भाग, कुछ जैसलमेर, कुछ जोधपुर, कुछ बीकानेर का भाग शेष थार का भाग पाकिस्तान में चला गया। दूसरा यह हाड़ौती से ऊपर वाला भाग गोचर जहाँ हाड़ोती से मन्दसौर का यह क्षैत्र है और तीसरा गुजरात का कच्छ है, इसके अलावा भी कहीं कुछ क्षैत्र हो सकता है। इन तीन क्षैत्रों में भैंस नहीं है और जर्सी नहीं है केवल देशी गाय है। वहाँ के लोग देशी गाय के दूध, घी आदि ही जीमते हैं। उनके खेतों में

अधिकतर केवल बारिस से ही फसलें होती है। इस कारण इन क्षेत्रों में डी.ए.पी, यूरीया आदि फर्टिलाईजर व कीटनाशक दोनों ही नहीं डाले जाते हैं। इन तीनों क्षेत्रों में आप स्वतंत्र रूपसे टीम बनाकर जायें, हम कह रहे हैं उसके बाद भी जायें कभी अवसर मिले तो। इन तीनों क्षेत्रों में वहाँ के लोगों को असाध्य रोग आज तक नहीं हुए। वहाँ कोई केंसर का रोगी नहीं, कोई ऐड्स का रोगी नहीं और क्या-क्या रोग होते हैं असाध्य। ऐसा कोई रोग नहीं होता। इतना ही नहीं वहाँ के लड़के और लड़कियों के अनुपात में कोई ज्यादा फर्क नहीं है। जो होना चाहिए उसी से चल रहा है। वे ना तो आसन करते हैं और ना ही प्राणायाम करते हैं, वे कुछ नहीं करते हैं, सुबह गायों को चराने ले जाते हैं और शाम को दूहने के समय लेकर आते हैं, अपना खेती का काम करते हैं। एकदम स्वस्थ हैं कोई रोग उनको नहीं हुआ।

बालव्यासजी बार-बार कहते हैं कि गोव्रति बनें, गव्यों का उपयोग करें। गव्यों का आहार में उपयोग करना गाय के उपर अहसान नहीं है। सबसे पहले अहसान हमारे ऊपर ही है। अगर हम इस तरह का आहार लेंगे तो बीमार नहीं होंगे। इस समय जो पूरे वातावरण में, सारे ब्रह्माण्ड में चाहे पृथ्वी हो, जल हो, अग्नि हो, आकाश हो, वायु हो इन सबमें विकृतियाँ फैली हुई है, इस कारण आदमी एक शाहाकारी होते हुए और ठीक तरह से दिनचर्या से जीते हुए भी रोगी हो जाता है। इन विकृतियों के कारण हवा में, जल में, अन्न में चारों तरफ जहर आ रहा हैं। वह जहर सूक्ष्म रूप में भी है और स्थूल रूप में भी है, दोनों तरह का है। २४ घण्टों में इतनी मात्रा में आ जाता है कि बहुत सारे रोगों का कारण बन जाता है। एक-एक शरीर में अनेक रोग होंगे इसलिये बहुत सारी दवाईयाँ हैं। अलग-अलग रोगों की बहुत दवाईयाँ प्रचलित है तो यह दवाईयाँ न लेनी पड़े, बीमारी हो ही ना, इसके लिये पूर्ण गोव्रति बनें। पूर्ण गोव्रति तभी बन सकते हैं जब प्रति दिन कम से कम पाव भर दही, पावभर दूध, दो तोला घृत और पाँच तोला गोमूत्र या फिर छाछ मिल जाये अपने ४००- ५०० ग्राम। ये लेने से हम गोव्रति बन जाते हैं। हम तो चाहेंगे कि हमारे सभी गोवत्स गोव्रति बनें और हम लोग इस प्रयास में भी लगे हुए हैं कि आपको गव्य प्राप्त हो। शुद्ध गव्य मिलना बहुत कठिन बात है। कल अपने बात हुई थी कि आजकल व्यापार में कपट, बईमानी, मिलावटी यह सभी चीजें हो गयी। इस कारण यह प्रयास है कि जो गोभक्त बड़े शहरों में रहते हैं, जिनके पास गाय नहीं हैं उन गोभक्तों को, गोवत्सों को गव्यों की प्राप्ति हो और प्रमाणिकता से हो। शुद्ध गव्य वहाँ तक पहुँचे ऐसा प्रयास है। घी तो लगभग कम्पनी के माध्यम से सभी जगह भिजवा ही रहे हैं, पर साथ-साथ में बालव्यासजी महाराज का आग्रह है कि दूध भी जाये तो एक सूखा दूध पैंकिंग कर रहे हैं। एक दिन आपको वहाँ अपने इस प्लान्ट में जाना भी है सबको।

तो वह चीज तो हो रही है आगे का प्रयास भी रहेगा कि अन्न, फल, सब्जी और औषधि ये भी गो आधारित कृषि उत्पाद हो, माने गाय के गोबर-गोमूत्र की खाद से उत्पादित ये सारी चीजें हों। वह भी केवल बातों से तो कुछ होना नहीं है, कुछ करना पड़ेगा। लोगों के स्वयं के जीवन में आयेगा और उन लोगों को देखेंगे तभी दूसरे लोग अनुकरण करेंगे। केवल भाषण से दुनिया नहीं बदलती। देश के गांव-गांव में वक्ता है, फिर भी देश तो वैसा का वैसा ही है, इसलिये वक्तव्य से देश नहीं

बदलेगा और इतना अच्छा वक्तव्य देते हैं, उस वक्तव्य का एक प्रतिशतः भी अपने जीवन में नहीं उतारते वे इसे दूसरे के लिये ही सोचते हैं। तो उतरता ही नहीं जीवन में, दूसरे बढ़िया तालियाँ हो गई सुन लिया और सुना दिया, पर कुछ भी नहीं मिला। न कहने वाले को मिला और न सुनने वाले को मिला, तालियाँ अवश्य बज गयी। ज्यादा कहने सुनने में तो भगवान का नाम और गोमहिमा ही रखें और बाकी चीजें करने में रखें, अपने जीवन में उसको उतारने में रखें।

इसलिये यह निर्णय किया कि भाई गोमहिमा बता रहे हैं पर उसकी अनुभुति तो तभी होगी जब वे स्वयं गव्यों का पान करेंगे और भाव से करेंगे। वैसे तो कंस आदि भी गव्य का पान करते थे। कल उत्तमजी ने बताया था कि अपने अधीन अपनी व्यवस्था में रहे, अपने गुलाम रहें, हमारी आज्ञा का पालन करें इसलिये कुछ लोगों को भैंस का दूध पीलाते थे। नहीं तो आदमी शक्तिशाली भी हो और विवेकवान हो तो किसी के अधीन नहीं रहेगा। इसलिये शक्तिशाली लोग तो उनको चाहिए, पर विवेक बिना के चाहिए। विवेक होगा तो वह स्वतन्त्र निर्णय कर लेगा। इसलिए उनको भैंस का दूध पीलाते थे। शास्त्रों में पढ़ा और बताया गया है, बिल्कुल पिलाते होंगे बहुत सारे ऐसे राजा अपने-अपने राज्य में। इस तरह के कुछ मनुष्य भी, कुछ पशु भी होते थे जिन्हें भैंस का दूध ही पिलाया जाता था। जैसे भार ढ़ोना हो या फिर पहलवानी करनी हो इन्हें भैंस का दूध पिलाते थे। वे खुद ब्रज से गायों का दूध मंगवाते थे। जबरदस्ती मंगवाते थे और वहाँ गोवत्स-बछड़े भी भूखे रहते थे और गोपालकों के वत्स वो भी दूध, दही इतना नहीं खा पाते थे। वो सारा दूध-दही इनके यहाँ शहर में आता था (कंस के यहाँ)। इसका विरोध भगवान ने किया।

आप सभी जानते हैं कि ये जो गो के प्रति श्रद्धा नहीं रखते हैं, जो गो की सेवा नहीं करते हैं ऐसे लोगों के गव्य पान करने से एक तो वे शक्तिशाली बनेंगे और इनकी बुद्धि भी तेज हो जायेगी पर भाव राक्षस के हो जायेंगे। क्योंकि उन्होंने केवल लिया ही लिया है गो, दिया क्या? मूल जिनकी प्रकृति आसुरी है वो केवल लेना ही लेना चाहता है, वो असुर कहलाता है। **''प्राण पोषण प्रणाः इति असुराः''** मुझे ही मिले-२, उसको असुर कहते हैं। तो वो मान बड़ाई, धन, पद सब कुछ अपने लिए ही चाहते हैं। उनकी मूल प्रकृति आसुरी होती है। ऐसे लोगों को गाय का दूध, घी आप देते हैं तो वे शक्तिशाली बनते हैं। आपकी सन्तान जो गोपालक है या गोपालन लोक संस्कृति का संवहन करने वाले हैं, उनको बढ़ाना है, पर वे लोग तो गव्यों के बिना कमजोर हो रहे हैं। इसलिये भगवान ने दूध बेचने की, दही बेचने की मनायी की। अभी तक हमको याद है कि जब हम छोटे थे तब हमारे यहाँ दूध नहीं बेचते थे। अब तो ३०-४० सालों से बेच रहे हैं, उसके पहले दूध नहीं बेचते थे, वैसे ही दूध दे देते थे। दूध बेचना और पूत बेचना एक समान माना जाता था। जिनके घर गाय नहीं होती उन गोपालकों को मुफ्त में दूध दिया जाता था। छाछ व दूध दोनों चीजें ऐसे ही मिल जाती थी। केवल घी का पैसा लेते थे। आज ऐसी परिस्थितियाँ हैं कि अगर बिना कुछ दिये दूध लेना चाहो तो सम्भव ही नहीं लगता। सारी व्यवस्थाएँ अर्थ प्रधान हैं, कितना लगता है और कितना मिलता है ..... शेष अगले अंक में।

श्री गोभागवत कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

.....पिछले अंक से आगे

तो आज की चर्चा तो यही हो गई कि ''श्रीमद् भागवत गोकथा'' गो कथा क्यों? यह इसलिए है, क्योंकि गाय की कथा ही सनातन धर्म की सही व्याख्या है। इसी के स्मरण में आज का यह समय सार्थक हुआ। अब हम कथा के क्रम को ले रहे हैं। श्री ध्रुवजी का अवतरण और श्री ध्रुवजी महाराज की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ध्रुवजी के यहाँ पधारे, यहाँ तक की चर्चा हम कल कर चुके हैं। अब यहाँ से आगे का स्मरण किया जा रहा है।

भगवान ध्रुवजी को दर्शन देने नहीं आये हैं तब किसलिए आये? भगवान ध्रुवजी का दर्शन करने आये, ध्रुवजी का दर्शन करने आये हैं। श्री मैत्रेय महर्षि वर्णन कर रहे हैं **''त एवमुत्सन्नभया उरुक्रमे कृतावनामाः प्रययुस्त्रिविष्टपम्। सहस्रशीर्षापि ततो गरुत्मता मधोर्वनं भृत्यदिदृक्षया गतः।।''** कहते हैं भगवान ने देवताओं को आश्वासन दिया और देवता अपने-अपने लोकों को चले गए। तदन्तर भगवान, कौन भगवान? बोले **सहस्त्रशिर्षा पुरुषा सहस्त्राक्षर सहस्त्रपात** कहकर नित्य सिद्ध अनादि अपौरुषिय वेद जिनकी स्तुति करते हैं वे भगवान सहस्त्रशिर्षा कहकर भगवान के सम्पूर्ण ऐश्वर्य का स्मरण किया है। छः प्रकार के ऐश्वर्यों से जो सम्पन्न हैं, ऐसे भगवान गरूड़ पर विरामान हुए और गरूड़ पर विराजमान होकर मधुवन में पहुँचे। किस लिए पहुँचे मधुवन में? **'सहस्रशीर्षापि ततो गरुत्मता मधोर्वनं भृत्यदिदृक्षया गतः'** अपने भृत्य, अपने सेवक, अपने भक्त बालक ध्रुवजी के **'दृक्षया गतः'** दृक्षया माने **'भृत्यदिदृक्षया'** देखने की, दर्शन करने की जो इच्छा है उसको दृक्षया कहते हैं। अपने भक्त बालक ध्रुव का दर्शन करने की अभिलाषा से भगवान आये।

ध्यान दें! गरूड़ पर बैठकर आये इसका तात्पर्य यह है कि भगवान को आने-जाने की आवश्यकता थी ही नहीं। अरे! जो सर्वगत, सर्वरूप, सर्वमय हैं, उनको आने-जाने की क्या आवश्यकता। जो एक देशीय हो वो एक देश से दूसरे देश की ओर गमन करे और जो सर्वदेशीय हो उस सर्वदेशीय को कहीं आने-जाने की आवश्यकता क्या है, वो तो जहाँ चाहे वहीं प्रगट हो जाए। **'काहुसु कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं'** भगवान कहाँ नहीं है सर्वत्र है पर वे सर्वव्यापक भगवान वहाँ नहीं पहुँचे। वैकुंठ से गरूड़ पर बैठकर भगवान चले, चल कर गए। क्यों गए चल कर? बोले जैसे भक्त चलकर हमारे दर्शन के लिए पहुँचता है वैसे ही हम भी भक्तका दर्शन करने चलकर जाऐंगे। चलकर जाते हैं कि नहीं क्योंकि यह छोटा सा बालक ध्रुव जिसकी पाँच वर्ष की मात्र अवस्था है और वह एकाकी वहाँ से चलकर के आया है। कहाँ बिछुर ब्रह्मावर्त और कहाँ मधुवन, वहाँ तक पैदल चल के आया है। तो वह इतना छोटासा बालक इतनी दूर से मेरी उपासना के लिए यहाँ तक चला आया तो मैं वैकुंठ से चलकर क्या मधुवन नहीं जा सकता। इसलिए **'मधोर्वनं भृत्यदिदृक्षया गतः'** अपने भक्त ध्रुव के दर्शन की कामना से भगवान वहाँ तक पहुँचे। दर्शन की कामना से पहुँचे और चल कर पहुँचे। एक हेतु और है गरूड़ पर बैठकर सहस्त्रशिर्षा भगवान के वहाँ तक चले आने का। इसलिए चले कि जब भगवान वैकुंठ से चले तो सत्यलोक में आये गरूड के पंखों से

वेदकी ऋचाएँ प्रकट होती रहती है उन ऋचाओं को सुनकर ब्रह्माजी को पता चला कि भगवान श्रीहरि पधारे हैं। ब्रह्मलोक के ऋषिओं के सहित ब्रह्माजी ब्रह्मलोक के द्वार पर उपस्थित हुए। जय जय प्रभो आज आपकी सवारी कहाँ पधार रही है। भगवान बोले- ब्रह्माजी आपको पता नहीं, आज हम अपने भक्त बालक ध्रुव का दर्शन करने जा रहे हैं। फिर महरलोक, जनलोक, तपलोक, स्वर्गलोक सब लोकों में, कैलाश भी गए। भोले बाबा बोले- कहाँ जा रहे हैं? बोले हम भक्त ध्रुवके दर्शन करने जा रहे हैं। तो इस प्रकार भगवान प्रचार-प्रसारपूर्वक पहुँचे।

हमारे महाराजजी कहते हैं कि भक्त महात्मा का संवर्धन करने के लिए भगवान गरूड़ पर बैठकर गए। जैसे हम सबके लिए दर्शनीय हैं, पर हमारे लिए भी दर्शनीय ध्रुव के जैसा भक्त है। तो कोई पूछता जय जय सवारी कहाँ पधार रही है? बोले, हम मधुवन जा रहे हैं। ध्रुवजी का दर्शन करने जा रहे हैं। भगवान ध्रुवजी के सामने खड़े हैं, लेकिन ध्रुवजी को बाहर खड़े हुए भगवान का अनुभव नहीं हो रहा है। बाहर खड़े हुए भगवान का अनुभव क्यों नहीं हो रहा है? **''स वै धिया योगविपाकतीव्रया हृत्पद्मकोशे स्फुरितं तडित्प्रभम्। तिरोहितं सहसैवोपलक्ष्य बहिःस्थितं तदवस्थं ददर्श''** ध्रुवजी के हृदय कमल में, हृदय सिंहासन पर शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी भगवान श्रीहरि विराजमान हैं। ध्रुवजी दर्शन कर रहे हैं उस **'हृत्पद्मकोश'** हृदय के हृत्पद्म कर्णिका के मध्य भगवान श्रीहरि खड़े हुए हैं। ध्रुवजी दर्शन कर रहे हैं। दिव्य क्रान्ति से उनका अन्तःकरण उल्लासित हो रहा है। अब ध्रुवजी तो पूरी तरह डूबे हुए हैं अपने अन्तर्यामी के ध्यान में। बाहर खड़े ठाकुरजी का उनको कैसे बोध हो! बाहर ठाकुरजी खड़े हैं तो बाहर वाले ठाकुरजी ने भीतर वाले ठाकुरजी को खींच लिया। वो दो भगवान नहीं थे एक ही थे। बाहर वाले भी वही और भीतर वाले भी वही, पर बाहर वाले भगवान ने भीतर वाले भगवान को अपने निकट बुला लिया। दोनों भगवानों के एक होने से भीतर वाले भगवान जब तिरोहित हुए तो ध्रुवजी ऐसे व्याकुल हो गये जैसे किसी मणिधर सर्प की मणि छिन जाये और सर्प व्याकुल हो जाये। जैसे शीतल गंगाजल की धारा में कलोल करने वाले किसी महामत्स्य को बरबस निकाल करके ज्येष्ठ मास की प्रचण्ड प्रतप्त बालुका में मध्यान्ह के समय छोड़ दिया जाए तो कैसी अवस्था होगी उस महामत्स्य की। ऐसी ही ध्रुवजी की स्थिती हुई, वे छटपटा गए।

व्याकुल होकर जैसे ही अपने नेत्रों को खोला- **'तिरोहितं सहसैवोपलक्ष्य बहिःस्थितं तदवस्थं ददर्श'** बाहर स्थित भगवान को देखा। जैसे ही देखा, आनन्द सिन्धु में भर गए। अरे देखो तो सही, भीतर वाले भगवान बाहर प्रगट हो गए। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय।

इससे एक सिद्धांत प्रकट हो गया। बहुत ध्यान से समझने की बात है यह। वो यह सिद्धांत प्रकट हुआ कि जब भी भक्त को भगवत् साक्षात्कार होता है तो वह अपने अन्तर्यामी परमात्मा से भिन्न नहीं होता अपितु सर्वतः अभिन्न साक्षात्कार होता है। हमारे वैष्णवाचार्यों ने भी अपने दर्शन ग्रन्थ में यही स्वीकार किया है। हमारे अन्तर्यामी स्वरूप में विराजमान हमारे जो अपने आराध्य, उपास्य भगवान हैं, वे भगवान ही हमें बाहर प्रकट होकर दर्शन देंगे। इससे एक बात और स्पष्ट हो गई वो यह कि बाहर प्रकट स्वरूप की अनुभूति के पूर्व ध्रुवजी के समान अपने हृतपद्म की कर्णिका में विराजमान

भगवान का अनुभव अत्यन्त-२ आवश्यक है, अपेक्षित है। जब भीतर वाले भगवान का दर्शन हो जायेगा तो वही अत्यन्त तन्मयतापूर्ण तदाकारवृत्ति होगी और भीतर स्थित अन्तर्यामी ही बाहरी स्वरूप के रूप में प्रगट हो जाऐंगे। इसका मतलब है ध्रुवजी के अन्तर्यामी भगवान श्रीहरि ही बाहर प्रगट हो गए। अब ध्रुवजी को कितना आनन्द हुआ -२ । महाराज! वाणी का विषय नहीं जो कह सकें, बहुत ही आनन्दित थे ध्रुवजी। **तद्दर्शनेनागतसाध्वसः क्षिता वन्दतागं विनमय्य दण्डवत। दृग्भ्यां प्रपश्यन् प्रतिबन्निवार्भक चुंम्बन्निवास्येन भुजैरिवाश्लिषन्।।'** इतना आनन्द ध्रुवजी के हृदय में हुआ कि ध्रुवजी साष्टांग लोट गए। फिर पृथ्वी पर खड़े होकर दर्शन कर रहे हैं। **'दृग्भ्यां प्रपश्यन्'** 'पश्यन' नहीं है, क्या है? 'प्रपश्यन' केवल देख नहीं रहे हैं, बड़े अनुरागपूर्वक आपद मस्तक पर्यन्त भगवान के रूप माधुरी को अपने नेत्रों के चस्कों में भर-भर कर पी रहे हैं, निहार रहे हैं। ऐसे लगता है मानो ध्रुवजी अपनी आँखो से भगवान को पी जाऐंगे। **'दृग्भ्यां प्रपश्यन् प्रतिबन्नि'** 'पीबन' नहीं 'प्रपीबन'। 'प्रपीबन' का अर्थ है- लगता है इस रूप सुधा सिन्धु की एक बिन्दु भी नहीं छोड़ेंगे। सबका सब पी जाऐंगे। प्रपीबन 'आर्भक श्यनपि प्रपीबन' अरे छोटा बालक कितना पीयेगा, अर्भक हैं, छोटे से बालक हैं, पर प्रीति इस पराकाष्ठा पर पहुँची है कि लगता है अब अपने नेत्रों के चस्कों में भर कर भगवान के रूप सुधा सिन्धु को पी जाऐंगे। सम्पूर्ण का सम्पूर्ण ही पी जाऐंगे एक बूँद भी शेष नहीं छोड़ेंगे। 'आसेन चुम्बन इवः' आहा! होठ फड़क रहे हैं 'आसेन चुम्बन इव' लगता है होठों से भगवान को चूम लेंगे, अंग प्रत्यंग को चूम लेंगे। 'आसेन चुम्बन इव' देखो चुम्बन जो है वो क्या है? वह प्रेम की, स्नेह की अभिव्यक्ति का एक प्रकार है। इसलिए चुम्बन को एक और परिष्कृत नाम दिया है साहित्यकारों ने! 'स्नेहांकण'। चुम्बन का एक नाम और है, क्या है? 'स्नेहांकण'। अपने स्नेह का अंकन कर देना, स्नेह की छाप लगा देना। स्नेहांकण वात्सल्यपूर्ण पिता-माता के भीतर अथवा कोई भी वात्सल्य भाव वाले व्यक्ति हैं, उनके चित्त में किसी बालक को देखकर जब विशेष वात्सल्य प्रकट होता है तो वे क्या करते हैं? चुम्बन करते हैं अथवा कोई छोटासा बालक है, उस बालक को अपने माता, पिता, भाई, बहिन आदि किसी बड़े के प्रति ज्यादा भाव जगा तो वो क्या करता है, ऐसे हाथ करो तो बालक भी चूम लेता है। देखा होगा घरों में। बालक क्यों चूमता है? बालक इसलिए चूमता है कि वह बेचारा ज्यादा तो समझता नहीं है, पर इतना समझता है कि स्नेहकी अभिव्यक्ति का प्रकार है चुम्बन। तो ध्रुवजी कितने बड़े हैं, पाँच वर्ष की अवस्था में। तो घर छोड़कर चल दिये, अभी ध्रुवजी का अक्षराम्भ भी नहीं हुआ था, विद्यालय नहीं गए थे ध्रुवजी। आज कल तो सुना जाता है डेढ़ साल या दो साल में ही बच्चों को भेज देते हैं विद्यालय, क्यों हमें तो ज्यादा पता नहीं है। दो साल में या ढ़ाई साल में लिखा जाता होगा, बहुत जल्दी नाम लिख देते हैं, पर हमारी मर्यादा यह नहीं है। इससे बुद्धि कुन्ठित होती चली जा रही है। श्री मनु महाराज कह रहे हैं मनुस्मृती में! पाँच वर्ष की आयु तक बालक का लालन-पालन करना चाहिए, उसको डाटना नहीं चाहिए, डराना-धमकाना नहीं चाहिए, मारना नहीं चाहिए। पाँच वर्ष की आयु तक बालक के भीतर भय उत्पन्न नहीं करना चाहिए। भूत खा जायेगा, कुत्ता काट जाएगा, बाबाजी ले जायेंगे। ऐसे

बालक कुन्ठित बुद्धिवाले हो जाते हैं। उनको ध ाीर-वीर साहसी बनाना चाहिए। 'लालयेत पंचवर्षाणि' पाँच वर्ष की आयु पूर्ण हो गई। अब अक्षराम्भ, पाटी पूजन। अक्षराम्भ दस वर्ष तक। 'दसवर्षाणि ताड़येत।' ताड़येत का अर्थ यह नहीं कि पिटाई में ही लगे रहें। ताड़येत का ताप्तर्य है दस वर्ष उसके अनुशासन वर्ष हैं। दस वर्ष तक माता-पिता, शिक्षक इनका कर्तव्य है कि वे बालक को पूर्ण अनुशासित बनावे। कितने हो गए? पंद्रह हो गए। क्योंकि पाँच वर्ष तो लालन-पालन के चले गए 'लालयेत पंचवर्षाणि' और 'दसवर्षाणि ताड़येत' तो दस और पाँच पंद्रह। अब पंद्रह पूरे होने के बाद लगा सोलहवाँ वर्ष। बोले जैसे ही बालक की सोलहवीं वर्ष लग जाए, तो बालक पर कठोरता नहीं दिखानी चाहिए। पुत्र के साथ मित्र के जैसा व्यवहार करना चाहिए। मित्र को आप डॉट-डपट कर, मार-फटकार कर नहीं मना सकते, मित्र तो शत्रु हो जाएगा। उसको समझाने के लिए सृहितसमत्त शैली में उसको उपदेश दिया जाएगा। मित्रको मित्र की तरह समझाया जाएगा और ये बिलकुल स्पष्ट है कि दस वर्ष जो बालक अनुशासन में जीयेगा उसको सोलहवे वर्ष में अनुशासित करना नहीं पड़ेगा। आज स्थिति क्या है कि पाँच वर्ष तक तो अनुशासन, जब बेचारे के बुद्धि को विकसित होने का समय है और फिर स्कूल में गया दस वर्ष फिर तो बीस-पच्चीस, तीस साल का हो जायेगा। तब तक तो वह स्वच्छन्द रूप से खाए-पीये, सोये-जगे, चाहे जहाँ जावे। ज्यादा उसके ऊपर कोई बात नहीं, बड़ा कॉलेज में पढ़ता है तो उस पर कोई ज्यादा ध्यान नहीं देता है। अब जब स्नातक बनकर पूर्ण निशाचर का प्रमाणपत्र लेकर जब वह घर में आया अब दिन में नौ-दस बजे तक सोकर उठता है जो नहीं खाना चाहिए वो खाना चाहता है अथवा खाता है, जो नहीं पीना चाहिए वह पीता है, जहाँ नहीं जाना चाहिए वहाँ जाता है। अब माता-पिता कहते हैं अरे! हमारे खानदान में ऐसा नहीं हुआ तुम ऐसा क्यों करते हो, फिर वे अनुशासन करते हैं। तब कोई पंखे से झूल जाता है, कोई चूहा मार दवा खा लेता है, कोई जहर पी लेता है, कोई रेलवे की पटरी पर लेट जाता है। माता-पिता को फिर जेल की हवा खानी पड़ती है। हमें अपने जीवन को सुखी बनाना है तो प्राचीन ऋषि-महर्षियों के द्वारा दिये गए उपदेशों को आदर देना ही पड़ेगा। अब विचार करें दस वर्ष, पंद्रह वर्ष की आयु तक जो बालक माता-पिता और गुरुजनों के अनुशासन में रह गया, वह दुनियाके किसी कोने में चला जाए उसका सत्य, शौच, सदाचार प्रभावित नहीं होगा। तो ध्रुवजी तो अभी पाँच वर्ष के बालक ही हैं। स्नेह की अभिव्यक्ति का प्रकार भी यही जानते हैं कि मेरी माता ज्यादा प्यार करती तो बार-बार चूमती है। तो अब भगवान प्रकट हुए हैं, इतना स्नेह ध्रुवजी के भीतर प्रकट हुआ अब क्या करें तो 'आसेन चुम्बन इव' ऐसे लगता है माने ध्रुवजी अपने होठों से भगवान के श्रीअंग को चूम लेंगे। 'भुजैरिवाश्लिषन' ऐसे लगता है मानो अपनी भुजाओं से ध्रुवजी भगवान को भर लेंगे, भुजाओं में भर लेंगे, आलिंगन कर लेंगे। बार-बार ध्रुवजी के मन में आता है कि मैं भगवान की स्तुति करूँ पर अभी स्कूल तो पढ़ने गए नहीं, विद्यालय पढ़ने गए नहीं तो, दो-चार श्लोक भी कण्ठस्त हैं नहीं, कैसे भगवान की स्तुति करें। करने की इच्छा है पर वाणी में सामर्थ्य नहीं है। भगवान का नाम है 'भक्तवांछा कल्पतरू'। अपने भक्तों की इच्छा को पूर्ण करने के लिए भगवान कल्पवृक्ष के समान हैं। अरे! कल्पवृक्ष नहीं

भगवान तो कल्पवृक्षों के बगीचे हैं 'आरामह कल्पवृक्षानाम्। 'आरामह' आराम माने बगीचा। कल्पवृक्षानाम् आरामहः भगवान कल्पवृक्षों के उद्यान हैं, बगीचे हैं 'आरामह कल्पवृक्षानाम् विरामह सकलाद्धाम अभिराम त्रिलोकानाम् रामः श्रीमान सकल प्रभु' भगवान तो कल्पवृक्षों के उद्यान हैं। इसलिए भगवान का नाम है 'भक्तवांच्छा कल्पतरू' भक्तों की इच्छा को पूर्ण करने वाले हैं। भगवान ने अपने पाँचजन्य शंख का स्पर्श ध्रुवजी के दक्षिण कपोल से करा दिया। **''स तं विवक्षन्तमतद्विदं हरिर्ज्ञात्वास्य सर्वस्य च हृद्यवस्थितः। कृतांजलिं ब्रह्ममयेन कम्बुना पस्पर्श बालं कृपया कपोले।।''** 'कृतांजलि' ध्रवजी केवल हात जोड़कर खड़े हैं और भगवान ने अपने ब्रह्ममय पाँचजन्य शंखसे ध्रुवजीके दक्षिण कपोलका स्पर्श किया। ध्रुवजी की सोई हुई सरस्वती जागृत हो गई देखो शंख को ब्रह्ममय क्यों कहाँ गया? ब्रह्म शब्द का अर्थ क्या होता है? ब्रह्म शब्द के अनेक अर्थ है। ब्रह्म शब्द का अर्थ वेद भी है। ब्रह्म माने वेद। ब्रह्ममय अर्थात् वेदमय। ताप्तर्य हुआ कि सम्पूर्ण वेदज्ञान का अधिष्ठान जो भगवान का पाँचजन्य शंख है, उस शंख का स्पर्श कराया। शंख का स्पर्श क्यों कराया? सम्पूर्ण वेदज्ञान का अधिष्ठान है और सम्पूर्ण ज्ञान का आकर मूल वेद है। सारा ज्ञान वेदोंसे प्रकट है, पूर्णज्ञान वेदों में विराजमान है। इसलिए भगवान ने वेद स्वरूप पाँचजन्य शंख का स्पर्श ध्रुवजी के दक्षिण कपोल से करा दिया। ध्रुवजी की सोई हुई सरस्वती जागृत हो गई। भगवान के हाथों में कौन-कौनसी चीज रहती है? शंख, चक्र, गदा और पद्म। सम्पूर्ण ज्ञान का अधिष्ठान है भगवान का पाँचजन्य शंख। सम्पूर्ण तेज का अधिष्ठान है भगवानका सुदर्शन चक्र। सम्पूर्ण आध्यत्मिक देवी बल का अधिष्ठान है भगवान की गदा, सम्पूर्ण वैभव का अधिष्ठान है पद्म। सम्पूर्ण तेज का अधिष्ठान है 'सुदर्शन महाज्वल सूर्य कोटि, संप्रभ कोटि, सूर्य संप्रभ अज्ञान तिमिर अंधानाम् विष्णोमार्गम् प्रदर्शय'। अंधेरा होगा तब हम रास्ते पर कैसे चलेंगे? प्रकाश के मार्ग पर चलकर के जायेंगे। हमारे भारत वर्ष में चतुष्सम्प्रदाय में साक्षात् सुदर्शनचक्र भगवान ही श्री निम्बार्क भगवान के रूप में धरती पर आये। 'विष्णौमार्गम् प्रदर्शय' अंधकार दूर करने के लिए सुदर्शन चक्र ही निम्बार्क भगवान के रूप में प्रगट हुए। निम्बार्काचार्यजी को सुदर्शन चक्र का स्वरूप माना गया। वैष्णवों में जो शंख, चक्र धारणकी जो परम्परा है वो इसलिए है। शंखमुद्रा, चक्रमुद्रा इनके धारण की परम्परा भी इसलिए है कि सम्पूर्ण ज्ञान का अधिष्ठान है शंख। शंखमुद्रा धारण हो गई तो 'ऋतेज्ञानेन मुक्तही' वो मुक्त हो गया। वो ज्ञान का पात्र हो गया, ज्ञान उत्पन्न हो जायेगा यह भाव है उसमें और चक्र से सम्पूर्ण पाप भस्मसात हो गये। प्रकाश का मार्ग प्राप्त हो गया। गदा का ताप्तर्य क्या है? सम्पूर्ण बल का अधिष्ठान है भगवान की गदा। 'नायमात्मा बलहीनेन लभ्याहः' ये भगवान के सम्पूर्ण बल का चिन्ह है भगवान की गदा और सम्पूर्ण श्री वैभव, लौकिक-अलौकिक सब प्रकार के वैभव का प्रतीक है भगवान के करकमल में स्थित पद्म, कमल। इसका तात्पर्य है कि भगवान का दर्शन करते ही, शंख का दर्शन करते ही, सम्पूर्ण ज्ञान चक्र का दर्शन करते ही, सम्पूर्ण तप-तेज और गदा का दर्शन करते ही, सम्पूर्ण आध्यात्मिक दैवी बल और पद्म का दर्शन करते ही सम्पूर्ण श्री की प्राप्ति भागवतों को हो जाती है। भगवान का दर्शन किया, भगवान ने शंख का स्पर्श करा दिया ध्रुवजी कुछ बोल नहीं रहे हैं, केवल हाथ जोड़कर खड़े हैं। .....

पाँच पितृभक्त बालक

द्वारिकापुरीमें शिवशर्मा नामके एक तपस्वी, वेदोंके ज्ञाता ब्राह्मण रहते थे। उनके पाँच पुत्र थे- यज्ञशर्मा, वेदशर्मा, धर्मशर्मा, विष्णुशर्मा तथा सोमशर्मा। ये सभी पिताके परम भक्त थे। शिवशर्माने एक बार अपने पुत्रोंकी पितृभक्तिकी परीक्षा लेने का विचार किया। वे योगसिद्ध थे, अतः मायाद्वारा उन्होंने एक घटना दिखायी। उनके पुत्रोंने देखा कि उनकी माता ज्वरसे पीड़ित होकर मर गयीं। यह देखकर वे पुत्र अपने पिताके पास गये और पूछने लगे कि 'माताकी मृत्युपर हमें क्या करना चाहिये।' शिवशर्माने अपने बड़े पुत्र यज्ञशर्मासे कहा- 'किसी तेज हथियारसे अपनी माताके शरीरको टूकड़े-टूकड़े करके इधर-उधर फेंक दो।' पुत्रने पिताकी आज्ञा का पालन किया।

शिवशर्माने अपने दूसरे पुत्र वेदशर्मासे कहा- 'बेटा! मैं स्त्रीके बिना नहीं रह सकता। सौभाग्य-सम्पत्तिसे युक्त जिस स्त्रीको मैंने देखा है, तुम उसे मेरे लिये यहाँ ले आओ।'

पिताकी आज्ञा मानकर वेदशर्मा उस स्त्रीके पास गये और उन्होंने उससे अपने पिताके पास चलनेकी प्रार्थना की। माया से प्रकट हुई उस स्त्रीने कहा- 'तुम्हारे पिता बूढ़े हो गये हैं, उनको खाँसी आती है, उनके मुखसे कफ निकलता है और भी बहुत-सी बीमारियाँ उन्हें हैं, मैं उन्हें पति नहीं बनाना चाहती। मैं तो तुम्हें चाहती हूँ। तुम सुन्दर हो, सुलक्षण हो, तरुण हो। तुम उस बूढ़ेके सम्बन्ध में क्यों इतनी चिन्ता करते हो, तुम मुझे स्वीकार करो। जिस- किसी वस्तुकी तुम्हें इच्छा होगी, मैं तुम्हें वह ला दिया करूँगी।

वेदशर्मा बोले-'देवि! तुम मेरी माता हो। ऐसे पापपूर्ण वचन तुम्हें नहीं कहने चाहिये। मैं निरपराध हूँ और पिताका भक्त हूँ। तुम जो कुछ माँगो, मैं वह तुम्हें दूँगा। स्वर्गका राज्य भी चाहो तो वह भी दूँगा, पर तुम मेरी प्रार्थनासे मेरे पिताके पास चलो और उन्हें प्रसन्न करो।'

उस स्त्रीने देवताओंके दर्शन करने चाहे। अपने तपोबलसे वेदशर्माने देवताओंके दर्शन करा दिये। अब उस स्त्रीने फिर कहा- 'देवताओंसे मुझे कुछ काम नहीं है। यदि तुम मुझे अपने पिताके लिये चाहते हो तो अपना मस्तक मुझे दो।'

वेदशर्माने प्रसन्नतासे कहा- 'आज मेरा जन्म लेना सफल हो गया। पिताके लिये प्राणत्याग करनेवाला पुत्र धन्य है!' उन्होंने तीखी तलवारसे अपने हाथसे अपना मस्तक उस स्त्रीके सामने काट दिया। रक्तमें सने उस सिरको लेकर वह स्त्री शिवशर्माके पास आयी। अपने भाईके कटे मस्तकको देखकर शिवशर्माके चारों पुत्र कहने लगे- 'हमलोगोंमें वेदशर्मा ही भग्यवान् थे। पिताके लिये इन्होंने अपने प्राण दे दिये।'

शिवशर्माने अपने तीसरे पुत्र धर्मशर्मासे कहा- 'बेटा! अपने भाईके मस्तकको ले जाओ। ऐसा उपाय करो, जिससे यह जी जाय।'

धर्मशर्माने भाईका मस्तक ले लिया और ले जाकर उनके शरीरपर जमाया। उन्होंने पिताकी भक्ति, तपस्या तथा सत्यके बलसे धर्मराजका आहवान किया। उनके आहवान करनेपर धर्मराज वहाँ प्रकट हो गये और उन्होंने वेदशर्माको जीवित कर दिया। धर्मराजके वरदान देनेकी इच्छा प्रकट करनेपर धर्मशर्माने उनसे पिताके चरणोंमें अविचल भक्ति, धर्ममें

प्रेम तथा मरने पर मोक्ष प्राप्तिका वरदान माँग लिया। वरदान देकर धर्मराज अदृश्य हो गये। भाईको लेकर धर्मशर्मा पिताके पास चले गये।

शिवशर्माने अपने चौथे पुत्र विष्णुशर्मासे कहा- 'बेटा! मैं अपनी इस प्रियतमाके साथ समस्त रोगोंको दूर करनेवाला अमृत पीना चाहता हूँ। तुम स्वर्ग जाकर अमृत ले आओ।

पिताकी आज्ञा मानकर विष्णुशर्मा अपने तपोबलसे आकाशमें होकर इन्द्रलोककी ओर चले। उन्हें आते देखकर देवराज इन्द्रने मेनका अप्सराको उनके काममें विघ्न डालनेके लिये भेजा। वह स्वर्गकी परम सुन्दरी अप्सरा सज-धजकर नन्दनवनमें मार्गके पास झूलने तथा बड़े मधुर स्वरमें गाने लगी। विष्णुशर्मा उसके पाससे निकले, परंतु उन्होंने उसकी ओर देखा ही नहीं ओर वो आगे बढ़ गया। उन्हें आगे जाते देख उस अप्सराने कहा- 'महामति विप्रकुमार! इतनी शीघ्रतासे कहाँ जा रहे हो? मैं कामदेवके बाणसे पीड़ित होकर तुम्हारी शरण आयी हूँ। मेरी रक्षा करना तुम्हारा धर्म है।'

विष्णुशर्मा बोले-'सुन्दरी! तुम्हारे मनमें क्या है, सो मैं जानता हूँ। तुमने महर्षि विश्वामित्रके तपका नाश कर दिया, पर मैं अपने पिताका भक्त हूँ, मुझपर तुम्हारा जादू नहीं चल सकता। मुझे पिताका काम पूरा करना है, तुम किसी और को ढूँढ़ लो।

इन्द्रलोकमें पहुँचकर विष्णुशर्माने इन्द्रसे अमृत माँगा। अमृत देनेके बदले देवराज अनेक प्रकारके विघ्न उपस्थित करने लगे। उन सब विघ्नोंको अपने तप तथा तेजसे नष्ट करके विष्णुशर्मा सोचने लगे-'यह इन्द्र मेरी बात नहीं मानता तो मैं इसे स्वर्गसे नीचे गिरा दूँगा और किसी दूसरेको यहाँ इन्द्र बना दूँगा।

इसी समय अमृत का घड़ा लेकर वहाँ देवराज आये। उन्होंने ब्राह्मणकुमारके चरणोंमें प्रणाम करके अपने अपराधोंके लिये क्षमा याचना की। वहाँसे अमृत लेकर विष्णुशर्मा अपने पिताके पास आ गये। शिवशर्माको अमृतकी आवश्यकता तो थी नहीं, वे तो अपने पुत्रोंकी परीक्षा ले रहे थे। अब उन्होंने अपने पुत्रोंको बुलाकर उनसे कहा- 'मैं तुमलोगोंसे प्रसन्न हूँ। तुम्हारे मनमें जो आये माँग लो।'

पिताकी बात सुनकर उनके पुत्रोंने कहा- 'आपकी कृपासे हमारी माता जीवित हो जायँ।' शिवशर्माने कहा- 'ऐसा ही हो।' उनके ऐसा कहते ही उनके पुत्रोंकी माता वहाँ आ पहुँचीं और बोलीं- 'पुण्यात्मा स्त्री पुण्यकर्मी पुत्रकी ही इच्छा करती है। अपने कुलके अनुसार आचरण करनेवाला, अपने कुल तथा माता-पिता को भी तारनेवाला पुत्र बड़े भाग्यसे मिलता है। मेरे सभी पुत्र अपने पिताके भक्त, धर्मात्मा, तपस्वी, तेजस्वी, यज्ञकर्ता और पराक्रमी हैं, यह मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है।'

शिवशर्माने अपने पुत्रोंसे फिर कोई वरदान माँगनेको कहा। उनके चार पुत्रोंने कहा- 'पिताजी! यदि आप हमपर प्रसन्न हैं तो हमें भगवान् के उस गोलोकधाममें भेज दीजिये, जहाँ जाकर फिर इस संसारमें लौटना नहीं पड़ता है।

शिवशर्मा बोले- 'तुमलोग सर्वथा निष्पाप और मेरे भक्त हो, अतः इस पितृभक्तिके प्रतापसे वैष्णवधाममें जाओ।' शिवशर्माके यह कहते ही शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी भगवान विष्णु गरुड़पर बैठे वहाँ प्रकट हो गये। भगवान् तो शिवशर्माको उनकी पत्नी तथा सभी पुत्रोंके साथ अपने लोक ले जाना चाहते थे; परंतु शिवशर्माने अपने चार पुत्रोंको ही भेजनेकी इच्छा प्रकट की। पितृभक्तिके प्रतापसे शिवशर्माके चार पुत्र भगवान्के साथ भगवान्के नित्यधाम को चले गये।

अग्र पूजा किसकी हो

(मलूकपीठाधीश्वर पूज्य श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....

एक बार हस्तीनापुर में परम धर्मनिष्ठ देवव्रत पितामह भीष्म से राजन पाण्डुजी ने पूछा था कि हे भगवन! श्रीकृष्ण परिपूर्ण परमात्मा हैं, अनन्तकोटि ब्रह्माण्डों के स्वामी हैं, गोलोकाधिपति हैं, उन भगवान ने इस धारती पर कृपा करके अवतार ग्रहण किया और हे भगवन! भगवान जो अवतार ग्रहण करेंगे उसी चरित्र को आप कृपा करके बतायें, तो उस समय श्रीपितामह भीष्म ने पाण्डुजी को यह सब सुनाया था। भगवान ने धरती पर आने का निश्चिय किया और अपनी प्राण वल्लभा श्रीराधा रानी को भी कहा- प्रिये ! श्रीराधाजी हमारा विचार है कि हम धरती पर जा रहे हैं तो आप भी धरती पर पधारें। श्रीराधा रानी ने कहा- जहाँ श्रीवृंदावन नहीं, जहाँ यमुनाजी नहीं, जहाँ श्रीगिरिराज गोवर्धन नहीं है वहाँ मेरा चित्त कैसे प्रसन्न होगा, कैसे आनन्दित होगा।

तब श्रीठाकुरजी गोलोकाधिपति भगवान श्रीकृष्ण ने अपने नित्य दिव्य त्रिपाद्विभुति श्रीगोलोकधाम से श्रीयमुनाजी और श्रीगिरिराज को यहाँ धरती पर भेजा। केवल यमुनाजी व गिरिराजजी ही नहीं आये, यहाँ गर्ग संहिता में लिखा है कि चौरासी कोस की भूमि ही नित्य गोलोक से धरती पर उतरी। यह प्रकृति मण्डल का क्षेत्र नहीं है, चौरासी कोस की प्रकृति धरती पर अवतरित हुई। कितनी भूमि? कहते हैं कि चौरासी कोस की भूमि वह भगवान के संकल्प से इस धरती पर आयी और उसमें श्रीयमुनाजी और ब्रज भूमि यहाँ चौबीस वनों के साथ प्रकट हुई। यमुनाजी का प्राकट्य कलंदगिरी पर हुआ। भूमि में ब्रज भूमि प्रकट हुई और श्रीगिरिराजजी का प्राकट्य भारत वर्ष की पश्चिम दिशा की और शाल्मली द्वीप के मध्य द्रौणाचल के पुत्र के रूप में श्रीगिरिराजगोवधर्न का जन्म हुआ। यह साक्षात् भगवान हरि है, नारायण है। जिस समय गोवर्धन का अवतरण हुआ, उस समय समस्त देवताओं ने आकाश से पुष्पों की वर्षा की और समस्त पर्वतों ने श्रीगिरिराज महाराज का उत्सव महोत्सव मनाया। यहाँ लिखा है कि वहाँ द्रौणाचल के पुत्र रूप में जब इनका प्रादुर्भाव हुआ उस समय समस्त ऋषि-महर्षियों ने, देवताओं ने और समस्त पर्वतों ने, सभी तीर्थों ने श्रीगिरिराजजी की प्रदक्षिणा कर विधिवत पूजन किया।

बड़े-बड़े पर्वतों ने श्रीगिरिराज गोधर्वन की स्तुति की है, मन्त्रों से पर्वतों ने स्तुति की है- आप परिपूर्ण श्रीकृष्णचन्द्र का स्वरूप हैं, गोलोक में गोमाता और गोपी-गोपाल इनसे युक्त होकर आप पूजित होते हैं। आपका नाम गोवर्धन है। जो नित्य गोलोक है उसके मध्य आप की स्थिति है। आज हम सब पर्वत आपको सम्राट के रूप में प्राप्त करके धन्यातिधान्य हो गये। उसी समय इस भुवन कोस, इस भूमण्डल के समक्ष पर्वतों ने उनको गिरिराज पद पर अभिषिक्त किया। 'बोलो श्री गिरिराज महाराज की जय।' हे वृन्दावन की गोद में विराजने वाले, वृन्दावन के मध्य विराजने वाले, गोलोक के हे मुकटमणि ! गोलोक भगवान का स्वरूप हैं और गिरिराजजी मुकुट के समान हैं। हे गोलोक मुकुटमणि गोवर्धन आप को नमस्कार है। इस प्रकार से ये गिरिराज महाराज प्रकट हो गये।

एक समय की बात है। महर्षि पुलस्त्य

तीर्थ यात्रा करते हुए शाल्मली द्वीप पधारे वहाँ द्रौणाचल के पुत्र के रूप में इन्होंने श्रीगिरिराज गोवर्धन पर्वत का दर्शन किया। इतना सुन्दर वर्णन है दो-चार श्लोंकों में- 'माधुरी की लताओं से आच्छादित सफल वृक्षों से अलंकृत बड़े-बड़े कुंज-निकुंज जिनमें बने हुए हैं, भँवर गुँजार कर रहे हैं ऐसे शान्त अनेक कन्दराओं से जो अलंकृत हैं और मंगल के तो साक्षात् अयन हैं, ऐसे रत्नमय, सौ जिनकी ऊँची-ऊँची चौटियाँ हैं, ऐसे विचित्र धातुओं का जिनका शरीर अलकृंत हो रहा है, ऐसे दिव्य पक्षियों के कलरों से अलंकृत श्रीगिरिराजजी का दर्शन किया और मृगों का दर्शन किया और शाखामंद बानरों का दर्शन किया। मयूर नृत्य कर रहे उनको देख, जिनके दर्शन मात्र से जीव संसार चक्र से छूट जाता है, ऐसे पर्वत को देखकर के महर्षि पुलस्त्य प्रेम विभोर हो गये। उनका हृदय गदगद हो गया, उनके नैत्रों से प्रेस आँसु झरने लगे।

अब उन्होंने द्रोण के निकट प्रस्थान किया। गिरीराज के पिता बनने का सौभाग्य पर्वत श्रेष्ठ द्रौणाचल को प्राप्त है। द्रौण ने महर्षि पुलस्त्य का स्वागत किया। भगवन आपने हमको पवित्र किया यहाँ पधारकर। आपकी क्या आज्ञा है? बोले हम ब्राह्मण हैं, ऋषि हैं कुछ याचना का संकल्प लेकर आपके द्वार पर आये हैं। गृहस्थ यदि ब्राह्मण की उचित याचना को पूर्ण नहीं करता है तो उससे वह दोष का भागी होता है। आप परम ब्राह्मणों के भक्त हैं, सन्तों के भक्त हैं। हमें विश्वास है हमारी याचना व्यर्थ नहीं जायेगी। द्रौणाचल ने कहा- महाराज माँगिये। तब आपने कहा कि आप कृपा करके हमें अपना पुत्र गोवर्धन दे दीजिये। मुझे दूसरों से प्रयोजन नहीं है, अपने पुत्र गोवर्धन को हमें प्रदान करो। हम गोवर्धन को यहाँ से काशीपुरी ले जायेंगे। जहाँ भगवान विश्वनाथ अन्नपूर्णाजी विराजमान है जहाँ पापी को भी मरणे से मोक्ष की प्राप्ति होती है। साक्षात् भगवती गंगा जहाँ उत्तरवाहिनी होकर विराजमान है। वहाँ कोई पवित्र पर्वत नहीं है। इसलिये काशी के निकट इनको विराजमान करेंगे और गोवर्धन सहस्त्रों-सहस्त्रों ऋषियों की तपोस्थली बनेगा। यह सुनते ही द्रोणाचल रूदन करने लगे लेकिन फिर भी श्राप के भय से व्याकुल होकर उन्होंने विचार किया कि महर्षि ने पहले वचन बद्ध कर लिया है, दे ही देना चाहिए।

उन्होंने गिरिराजजी को प्रदान कर दिया। इस पवित्र भारतवर्ष में तुम महर्षि के साथ प्रस्थान करो। जहाँ धर्म, अर्थ, काम इन तीनों पुरुषार्थों की सिद्धि होती है और फिर मोक्ष की भी प्राप्ति होती है। ऐसे तुम पवित्र भारतवर्ष में प्रस्थान करो। गोवर्धन ने कहा महर्षि आप हम को कैसे ले जायेंगे? क्योंकि हमारा स्वरूप आठ योजन लम्बा है। चार कोस का एक योजन होता है। यानि बत्तीस कोस लम्बे, बीस कोस चौड़े और ८ कोस ऊँचे ऐसा गिरिराजजी का स्वरूप है। ऐसा हमारा विशालकाय स्वरूप हैं तो आप हमें कैसे ले जायेंगे। महर्षि पुलस्त्यजी ने कहा हे गोवर्धन ! तुम हमारे दाहिनी हथेली पर सुखपूर्वक विराजमान हो जाओ, मुझे कोई आपका भार नहीं है। अपने तपोबल से महर्षि पुलस्त्य ने अपने दायनी हथेली पर रख लिया। किन्तु गिरिराजजी ने कहा दिया हे महर्षि ! जहाँ हमें धरती पर आप विराजमान कर देंगे वहाँ से फिर में उठुँगा नहीं। महर्षि ने कहा हम आपको बीच में रखेंगे ही क्यों। हम तो आपको सीधे काशी ले जाकर विराजमान करेंगे। पर जैसे ही पवित्र ब्रजभूमि आयी उसका दर्शन कर श्रीगिरिराजजी विचार करने लगे कि असंख्य

ब्रह्माण्ड आधिपति भगवान अवतार लेकर यहाँ लीला करेंगे, किशोर लीला करेंगे, वत्सचारण करेंगे, गोचरण करेंगे, दान लीला आदि लीलाएँ करेंगे। साक्षात् गोलोकाधिपति भगवान यहाँ पधारेंगे, मैं उनके दर्शन से, उनकी लीलाओं से कृतार्थ हो जाऊँगा। ऐसा विचार करके अकस्मात अपने भार को इतना बढ़ा दिया कि महर्षि उसे धारण करने में असमर्थ हो गये। उनको यह अनुभव नहीं हो पाया कि भार बढ़ गया है। उनको लगा कि यह पर्वत हम बहुत दूर से अपनी हथेली पर विराजमान करके लेकर आये हैं। लगता है बहुत श्रम हो गया है। इसलिये थोड़ी देर के लिये विश्राम कर लें, यमुना में स्नान कर लें और संध्या आदि से निवृत होकर फिर हम ले जायेंगे। वो गिरिराजजी ने जो शर्त रखी थी महर्षि पुलस्त्य को उसकी विस्मृति हो गयी। और फिर उन्होंने गिरिराजजी को विराजमान कर दिया और फिर यमुना में स्नान करने चले गये। यहाँ तो ऐसा लिखा है कि उनको लघुशंका की इच्छा हो गयी और विचार किया कि इतने पवित्र श्रीहरिनारायण स्वरूप को हथेली पर लेकर कैसे लघुशंका से निवृत हो जायें। इसलिये भी उन्होंने विराजमान कर दिया और यमुनाजी में स्नान करके अपना संध्यादि कृत्य सम्पन्न करके बोले- हे पर्वतराज ! आप उठकरके खड़े हो जायें, पर वो तो उठते ही नहीं। सम्पूर्ण अपनी तपोशक्ति का प्रयोग किया महर्षि ने किन्तु वे हिला भी नहीं सके गिरीराजजी को। तो श्रीगिरिराज से महर्षि पुलस्त्य ने कहा, क्या तुम रूष्ठ हो गये हो मेरे ऊपर, क्या कारण है उठते क्यों नहीं हो? श्रीगिरिराजजी ने कहा कि हमने पहले ही प्रतीज्ञा कर रखी थी कि जहाँ रखोगे वहाँ से उठूँगा नहीं। यह सुनते ही महर्षि पुलस्त्यजी ने श्राप दे दिया कि तुम हमारा मनोरथ पूर्ण नहीं कर रहे हो इसलिये प्रतिदिन एक तिल तुम क्षीण होंगे। यह श्राप दे दिया और श्राप दे करके वहाँ से चले गये। साक्षात् गिरिराज गोवर्धन वहाँ कृपापूर्वक विराजमान हुए। बोलो श्रीगिरिराजजी महाराजजी की जय।

भगवानने गिरिराजकी पूजन की विधि स्वयं ने बतायी है और वह संविधि पूजन यहाँ यज्ञाचार्य पूज्यश्री पाठकजी के आचार्यत्व में संविधि सम्पन्न हुआ है। कहते हैं, भगवान स्वयं वर्णन कर रहे हैं कि नन्दवासियों को गिरिराजजी की पूजा की विधि बता रहे हैं। पूरे भारत वर्ष आज पवित्र गोमाता के गोबर से श्रीगोवर्धन को विराजमान किया जाता है। लिखा है कि गिरिराजजी की सन्निधि में जो पूजन हो तब तो वहाँ गाय के गोबर से लीप करके और गिरिराजजी को अभिषेक करके अलकृंत करना चाहिए और मान लो गिरिराजजी की सन्निधि न हो तो गोबर में श्रीगिरिराजजी का निवास है। यहाँ गोमय को गिरिराजजी के स्वरूप में विराजमान कर दिया जाता है और गोवर्धनजी का आहवान किया जाता है तो वहाँ गिरिराज गोवर्धन प्रकट हो जाते है। यहाँ तो चारों और गोमाताएँ गोमय कर रही है। प्रत्येक गोमय में गिरिराज है और साक्षात् गिरिराजजी अपने स्वरूप से मंडप में विराजे हुए हैं। वैसे कहा जाता है कि गिरिराजजी ब्रज के बाहर नहीं जाते पर ब्रज के बाहर हो तब ना, यह तो ब्रज ही है। ब्रज के मध्य गोष्ठ में ही श्रीगिरिराजजी विराजमान हैं। उन्हें गोदुग्ध से स्नान कराना चाहिए, श्रीगंगाजल से भी स्नान करवाना चाहिए और श्रीयमुनाजल से भी स्नान करवाना चाहिए। क्योंकि गंगाजी भी उनके मानसिक रूप में ही प्रकट हुई और यमुनाजी तो ब्रज में विराजमान ही हैं तो गंगा और यमुना इन दोनों से भक्तिपूर्क स्नान कराना

चाहिए और कहते हैं कि जितना अधिक से अधिक हो सके गोदुग्ध धारा गिरिराजजी को अर्पित करना चाहिए। आज भी गिरिराजजी में बहुत से लोग दूध की धार चढ़ाते हैं। दूध का अभिषेक होता है। ठीक है परम्परा का निर्वाह चल रहा है। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि लोगों द्वारा किये जा रहे सिन्थेटिक दूध के अभिषेक के प्रभाव से गिरिराजजी की सिलाओं में क्षरण होने लग गया। बाबा ठाकुरदासजी महाराज गाय का घी भेजते थे और कहते थे कि गिरिराजजी की सिलाओं को लगाकर आओ। ठाकुरजी के गोघृत और कपूर भेजते थे। यहाँ आये हुए श्रद्धावान साधकों से भी हमारा निवेदन है कि पूज्या गोमाता का दूध प्राप्त हो तभी गिरिराजजी को दूध चढ़ाना, नहीं तो साष्टांग वंदन कर लेना। उसीसे गिरिराजजी प्रसन्न हो जायेंगे। तो श्रीगिरिराजजी को गोदुग्ध ा की धार अत्यन्त प्रिय है। दूध की धाराएँ चाहिए, उनके पंचामृत से महाभिषेक करना चाहिए और सुगंधित पुष्प तथा इत्र आदि से भी स्नान कराना चाहिए। अन्त में श्रीयमुनाजी से स्नान कराना चाहिए। श्रीगिरिराज को दिव्य वस्त्र और अलंकार ग्रहण करवाना चाहिए और महाराज! एक विशेष बात लिखी है नेवैद्य की प्रधानता है श्रीगिरिराजजी में और सब दूध, दही, पंचामृत में, अलंकार में थोड़ी भी कसर रह जाये तो कोई बात नहीं पर गिरिराजजी के भोग में कसर रहनी नहीं चाहिए। खूब विशाल अन्नकूट अर्पित करना चाहिए। आज भारत वर्ष में भी, हमारे ब्रज में भी यहाँ कहीं ब्रज के बाहर भी वैष्णव हैं वे गिरिराजजी को अन्नकूट भोग लगाते हैं। कहते हैं कि माला के आकार में श्रीगिरिराजजी के चारों और दीपमालिका प्रज्जलित करनी चाहिए और इसके बाद श्रीगिरिराजजी का महाराजजी, स्वयं भगवान ने भागवतजी में अग्नि, गो और ब्राह्मण इनके सहित गिरिराजजी की प्रदक्षिणा भगवान ने की। इसके बाद गिरिराजजी को पुष्पांजलि निवेदन करें और गिरिराजजी को दण्डवत् प्रणाम करें।

गोपाल, गोविन्द, गिरिराज ये सब गो के हेतु से ही हैं। इन सब की महिमा भी इसी में हैं कि ये सब गो के लिये और गो के पीछे हैं। देखा न ठाकुरजी नंगे पाँव छोटी सी लंगोटी लगाये बछड़ों के पीछे-पीछे उनको चराने जाते हैं उन घोर वनों में जहाँ राक्षसों के भय से बड़े भी जाने से डरते हैं। पर किस लिये जाते हैं। बस हेतु एक ही है- गोसेवा हो रही है। तो ठाकुरजी के लिये भी गो अग्र में हैं, बाकि सब पीछे।

गोवर्धनजी से कई जल धाराएँ निकलती हैं, जिनसे सारा का सारा क्षेत्र हरा-भरा रहता है। यमुनाजी तो है ही, लेकिन गिरिराजजी भी ब्रज क्षेत्र के लिये वरदान है। गायों के सब चरागाह हरे-भरे रहते हैं। गिरिराजजी पर भी गायों के लिये खूब घास होती है। इसीलिये तो इनका महत्व है क्योंकि ये भी गो की सेवा कर रहे हैं, गिरिराजजी भी गोसेवा में समर्पित हैं।

तो इस तरह हम देख रहे हैं कि गोविन्द भी गोभक्त, गोउपासक हैं और गिरिराजजी भी गोसेवक, गोभक्त हैं। सबकी आराध्या गो ही है। तो हमारे आराध्य की जो आराध्या अर्थात् गो ही अग्रपूजा की अधिकारिणी हो सकती है और आज हुआ भी यही। आज दीपावली के इस पावन पर्व पर, इस दिव्य महा अनुष्ठान में, हजारों गायों के मध्य, सहज भगवत् संकल्प से, भगवत् प्रेरणा से संध्या के काल में यज्ञ नारायण भगवान की भी आराध्या, उपास्या, वन्दनीया पूज्या गोमाता की अग्र पूजा सम्पन्न हुई और आप सभी को बहुत-२ जय गोमाता, जय गोपाल।

श्रीसुरभि शतक

(पं.रामस्वरूपजी)

शेष भाग.....

गिरि गोवर्धन धार कें, कियौ गऊ कौ त्राण।
प्रलयमेघ थक रह गये, भूलौ इन्द्र गुमान।।
गऊ अपराध न सह सके, कहा भयौ देवेन्द्र।
इन्द्र नाम महिमा घटी, प्रगटे गो गोविन्द।।
इन्द्र न सन्मुख जा सके, कर अपराध महान।
कामधेनु आगे करी, लखि तोषे भगवान।।
त्रिभुवन की शोभा अमित, सिमिट कियो बेहाल।
वंशीवट कालिन्दितट, शुक पिक गऊ गोपाल।।
माखन चाखन हेत हरि, ठुमुक नचैं अरु गाय।
गोपिन कठपुतली बने, गोबर हेल उठाय।।
गोचारण के हेत ही, भयौ कृष्ण अवतार।
बछड़ा लै जमुना पुलिन, खेलत करत विहार।।
देख अघासुर मुख गुहा, बछड़ा संग गये ग्वाल।
हरि हू घुस अघ मार कर, जीवित किये गो ग्वाल।।
गोप अष्टमी जान के, गोचारण हठ कीन्ह।
शाण्डिल्य आ पूजा करा, कृष्ण ग्वारिया कीन्ह।।
गायन कौ शृंगार कर, हरि अतिशय सुख पाय।
गऊ आराधैं भाव सों, नंगे पाँयन धाय।।
लकुटी कामरि वेणु कर, गिरि चढ़ गाय बुलाय।
उठा कान चौपां भगे, गायन हरि सुखपाय।।
सांय समय गोरज उड़त, मुखमण्डल लयटंय ।
गायन के अनुचर बने, गोपिन नयन समाय।।
ऋद्धि सिद्धि स्वाहा स्वधा, तुष्टि पुष्टि धृति रूप।
लक्ष्मी कीर्ती कान्ति मति, श्रद्धा ही गो रूप।।
धर्म, अर्थ अरु काम, मोक्ष, पालक पृथ्वी रूप।
अमृतनाभि सुरभि रसा, महालक्ष्मी गोरूप।।
क्षीर सिन्धु मन्थन प्रगट, पाँच धेनु समुदाय।
बहुला सुरभि सुशीला, नन्दा सुभद्रा गाय।।
भारद्वाज गौतम असित, ऋषि जमद्ग्नि वशिष्ठ।
यज्ञ हेत गोदान कर, सुख पायौ परमेष्ठि।।
माता दुहिता स्वसा गो, रूद्रवसू आदित्य।
गो अवध्य पूजा करौ, अमृतनाभि नित्य।।
देव गुरु उपदेश सुन, धेनु भक्त भये भूप।
सोमक नैषध उशीनर, विश्वदृश्व सुखरूप।।
मान्धाता मुचकुन्द नृग, भूरिदुम्न दिलीप।
भागीरथ औ पुरूरवा, कथा पुराण अनूप।।
पितृपक्ष है, धन नहीं, कहो श्रद्धा क्यों होय।
घास खिला दे गाय को, पितृ तृप्ति फल होय।।
पथमेड़ा आनन्दवन, नन्दगांव गोधाम।
दत्तशरण किरपा करी, राखौ अपने ग्राम।।
मैं अपराधी जनम कौ, हिय गोभक्ती नाहिं।
चरण पड़ौ विनती करों, हरि गोभक्ती पाहिं।।
हो समर्थ, हौ दत्त तुम, गोरक्षा हित सूर।
और कहू नहिं देव मोहि, गोभक्ती भरपूर ।।

श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद

एक गोसेवक

पिछले अंक से आगे.....

मेरी बूढ़ी माता ईधर ही खड़ी रहना.. .अभी थोड़ा चारा-पानी लाते हैं। .....ले मैया पानी पीले थोड़ा..... अब यह चारा खा... ...हम दूसरी मैया को खड़ी करते हैं।

ओह..हो...हो..हो ! पुजारी इस गाय के तो देखो कितना गहरा घाव है और उसमें तो बहुत सारे कीड़े हैं। मैं कीड़े निकाल रहा हूँ, तुम देखो ग्वाले के छप्पर के आस-पास कोई दवाई तो नहीं रखी हुई है। ..... इतने कीड़े इसे खा रहे हैं, कैसे सहन कर रही होगी ? इसके ग्वाले को कोई परवाह ही नहीं। ऐसे लागों की इससे बुरी गति होनी है। साफ तो कर दिये कीड़े पर दवाई होगी या नहीं।

पुजारी- प्रभु ! दवा तो नहीं थी, पर यह गाढ़ा तेल मिला है वहाँ।

श्रीकृष्ण- हाँ पुजारी यह ठीक है, कीड़े तो इसकी बदबू से नहीं आयेंगे। ...अब इसको भी वैसे ही खड़ी करनी है। लो लगाओ जोर. ..हाँ ऐसे ही...बस-बस खड़ी हो गई.... अरे..अरे यह तो वापस गिर रही है... इसे नीचे लकड़ी डाल कर थोड़ी देर अधर रखना पड़ेगा... हाँ ऐसे ही थोड़ी देर तक रखते हैं। .... अब मैया के पाँव टिकने दो..... देखें स्वयं की ताकत लगाती है क्या ? .. हाँ बस ठीक है...अब खड़ी रहने दो..। थोड़ा चारा-पानी इसको भी डाल दो।

(इस तरह से पुजारी के साथ श्री कृष्ण रात भर भूखी-प्यासी और बीमार गायों की सेवा करते रहे। पुजारी अब पूरी तरह से थक चुका था। एक तरफ जाकर बैठ गया, जबकि श्री कृष्ण अभी भी वैसे ही दौड़-दौड़ कर एक-एक गाय तक मदद पहँचा रहे हैं। सवेरा होने वाला है, पुजारी को मंदिर का, सुबह की आरती का स्मरण होने लगा...)

पुजारी- प्रभु ! सुबह होने वाली है, काफी दूर आ गये हैं हम। वहाँ लोग जाग गये तो यह सब राज खुल जायेगा, या फिर मंदिर से मूर्ति चोरी की खबर सब जगह फैल जायेगी। मंदिर की सफाई, पूजा-आरती का भी समय हो जायेगा। अब तो हमें चलना चाहिये। दिन निकलते ही यहाँ पर भी गाँव के लोग हमें देख लेंगे। आज प्रभु ! जन्माष्टमी है, आपके जन्म दिवस के उपलक्ष में मंदिर में बहुत बड़े उत्सव का आयोजन भी रखा हुआ है।

श्रीकृष्ण - पुजारी ! मेरा तो यहाँ रोज आना होता है, इसलिये मैंने तो इसका उपाय कर रखा है। जब कभी भी मुझे इन गोपालकों से सामना करना होता है तब मैं एक साधु का रूप बना लेता हूँ, तुमसे क्या छुपाऊँ अब। अगर चाहो तो तुम्हें भी कोई नया रूप दे दूँ। तुम्हें जाना हो तो जा सकते हो। मूर्ति की चिन्ता मत करो, वह अब अपने यथा स्थान पर स्थापित हो चुकी है। जन्माष्टमी का तो मुझे कोई ज्यादा शौक नहीं है। तुम्हारे सामने ही है गायों की स्थिति, क्या इनको छोड़कर उत्सवों में भाग लेना चाहिये ? कदापि नहीं। हाँ, यहि आप लोग गो-कल्याण महोत्सवों का आयोजन रखें तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी और तब मैं उनमें अवश्य उपस्थित रहूँगा, उससे लोग गोसेवा से जुड़ते हैं, उनका कल्याण होता है। गोमाता के कष्ट भी दूर होते हैं।

जन्माष्टमी महोत्सवों में आप लोग मेरी नकल का प्रयास करते हैं, जैसे दही से भरी मटकियों फोड़ना, माखन चुराना आदि। पता है आपको, मैं कौनसे दही से भरी मटकियों फोड़ता था, कौनसा माखन खाता था ? केवल

और केवल गोमाता का, अन्य जानवरों का नहीं। और आप लोग ? देखा भी है कभी गाय का दही, माखन कैसा होता है ? इतनी समझ यदि आप लोगों में होती तब तो गाय का इतना तिरस्कार होता ही क्यों ? गोमाता की ऐसी दुःर्दशा के लिये आप लोग ही जिम्मेवार हैं, कसाई तो आप द्वारा की गई इस उपेक्षा का लाभ उठा रहा है। मेरे नाम पर जानवरों के इन दुर्गन्धयुक्त दही को मेरे सामने फैलाकर आप मेरे प्रति घोर अन्याय कर रहे हैं। मैं तुम्हारे ऐसे कार्यक्रमों से, ऐसे प्रसादों से प्रसन्न नहीं बल्कि बहुत नाराज होता हूँ। इस प्रकार आप मेरा घोर अपमान करते हैं। उल्टे काम करके और मेरी प्रसन्नता चाहते हो, कभी नहीं हो सकता ऐसा। मेरा और गोवंश का अपमान कर आप कभी प्रसन्न नहीं रह सकोगे। मेरी गैया तड़प-तड़प कर मर रही है और शानो -शौकत से आप लोग बैठे हो करोड़ों के मठ-मंदिरों में अपने को बहुत बड़ा बनाकर। ना समझ लोग प्रतिदिन करोड़ों रुपये और धन-दौलत मेरे और धर्म के नाम पर आपको समर्पित कर जाते हैं। आपने खजाने भर रखे हैं धन से। क्या इसका यही सदुपयोग है ? क्या इस धन पर आपका कोई अधिकार है ? क्या तुम्हें पता है, इसमें से एक कोड़ी भी आप मेरी अनुमति के बिना खर्च करने के अधिकारी नहीं हो ? जबकि आप अपनी मन मर्जी से इस मेरे खजाने को लुटा रहे हो, केवल अपनी सुख-सुविधाओं पर। मेरे लिये क्या किया आपने, मुझसे कभी पूछा भी है कि इस दौलत का सही उपयोग कहाँ करें प्रभु ?

मंदिर के द्वार पर प्रतिदिन कई भूखी-प्यासी गायें खड़ी रहती हैं। मंदिर में दर्शनों हेतु आने-जाने वाले लोग उन्हें याचक की भाँति खाने-पीने की वस्तुएँ डालते हैं। कई बार मैंने आपको भी द्वार पर खड़ी गायों को भिखारी की भाँति टुकड़े डालते व डण्डा लेकर गायों को भगाते हुए या दूसरों को उन्हें भगाने के आदेश देते हुए देखा है। आप मंदिर के सब लोग उन्हें फूटी आँख देखना नहीं चाहते हैं, जैसे कि यह मंदिर तो आपकी निजी सम्पति है। मैं बिन गायों के रह नहीं सकता और गायें मेरे बिना नहीं रह सकती, पर बीच में आप लोग हैं जो दीवार बने हुए हैं। कभी आपने सोचा भी है कि मैं केवल भगवान ही नहीं हूँ, बल्कि उससे कहीं अधिक मैं और मेरा कुल ग्वाला हैं। हमारे कुल का पैतृक धन्धा ही गोपालन है, तो भला गायों और ग्वालों के अलावा हमारा सर्वाधिक प्रिय और हो ही कौन सकता है ? आप लोग मेरे निकट रहने का स्वाँग रचकर भी जब मेरी प्रिय गोमाताओं का अपमान और तिरस्कार करते हैं तो मुझे कितनी पीड़ा होती है, वो बस जहर का घूँट मैं ही पी सकता हूँ।

हे पुजारी ! आप और आपके इस मंदिर का प्रशासन एक बेहद घृणित और अपराधिक कृत्य में संलग्न रहे हैं, मैं आपको आज आगाह कर देता हूँ कि इस घोर और राक्षसी कार्य को छोड़ दो नहीं तो मैं तुम सबका नाश कर दूँगा, मुझे इस सम्बन्ध में अब ज्यादा कुछ सोचना नहीं है। इस सम्बन्ध में मैं बहुत कुछ सोच चुका हूँ और मैंने आगे के लिये कुछ निर्णय भी कर लिये हैं। मंदिर में रहकर इतना भयंकर इष्ट द्रोह !...अरे राम. .राम..राम ! अब मैं तुम्हारी जिन्दों की खाल खींच दूँगा। सुदर्शन चक्र से तुम सबके टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा। तुमने संसार को मालिक विहिन जो समझ रक्खा है। खबरदार... आगे से गो के प्रति एक भी अपराध किया तो .. तुमने अभी तक मेरा केवल माधुर्य ही देखा है.

(एका-एक श्रीकृष्ण आवेश में आ जाते हैं। उनका चेहरा लाल होकर तमतमाने लगता है और घबराकर प्रभु के चरणों में गिर जाता है। उसे अब भगवान के विराटरूप के दर्शन होते हैं। वह देखता है कि विराटरूप में से सबसे पहले श्रीकृष्ण निकलते हैं और वे निकलते ही बाँसुरी की मधुर धुन बजाते हैं। बाँसुरी की मधुर आवाज सुनते ही संसार का सम्पूर्ण गोवंश एकदम प्रसन्न मुद्रा में आ जाता है और जैसे सब नदियें समुन्द्र की ओर दौड़ती है, ऐसे ही चारों तरफ से गायों के झुण्ड के झुण्ड श्रीकृष्ण की ओर दौड़ पड़ते हैं। विराटरूप में से फिर एक हाथ में फरसा (परशु) लहराते हुए परशुरामजी ऊँची आवाज में गोघातियों को ललकारते हुए प्रकट होते हैं और उद्घोष करते हैं- '२१ बार इस धरती को क्षत्रियों से विहिन करने वाला मैं जमदग्नि पुत्र परशुराम फिर आ गया हूँ। गोहत्यारों, गोघातियों सावधान !' और फिर दौड़ पड़ते हैं कसाईयों के पीछे। सभी देवता और ऋषि-मुनि, साधु-संत आकाश से फूलवर्षा करते हैं और गोमाता तथा भगवान की जय-जयकार करते हैं। देखते ही देखते परशुरामजी का फरसा चलने लगता है। चारों ओर गोघातियों में हाहाकार मच जाता है। जिधर देखें उधर पापियों ओर कसाइयों के सिर ऐसे धड़ से अलग हो-होकर गिर रहे हैं जैसे पके हुए फल पेड़ से गिर रहे हैं। परशुरामजी के बाद एक-एक कर कई गोपालक राजा विराटरूप में से तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्रों सहित प्रकट होते हैं। देखते ही देखते पूरी पृथ्वी पर ये गोभक्त राजा फैल जाते हैं और गोघातियों पर टूट पड़ते हैं भूखे शेर की भाँति। विशालकाय रूप में अब परशुरामजी धरती पर चल रहे हैं। उनके पाँवों में बालू के कणों की तरह असंख्य नरमुण्ड पड़े हैं। धरती को कुछ ही मिनटों में एकबार के लिये गोघातियों से विहिन कर दिया गया। एक-एक कर गोभक्त राजालोग फिर से लौटने लगे हैं विराटरूप की ओर। देखते-ही-देखते सभी राजा विराटरूप में अपने-अपने यथा स्थानपर समा गये। अब परशुरामजी भी विराटरूप की ओर धीरे-धीरे डगें भरते हुए और विकराल चेहरा लिये हुए, एक हाथ में फरसा और एक हाथ में शिव की विजय पताका लिये हुए लौट रहे हैं। विराटरूप के पास आकर फिर एक बार संसार की ओर मुँह करके खड़े होते हैं और बुलन्द आवाज में दहाड़ते हैं- 'मैं आज सभी को चेतावनी देकर जाता हूँ, गोवंश पर किसी ने हाथ उठाने की फिर हिम्मत की तो मुझ जैसा बुरा कोई नहीं होगा ! उनके भी ये ही हाल होंगे जो इन कसाइयों के हुए हैं। याद रखना ! परशुराम मर नहीं गया है ! मैं फिर आऊँगा ! धरती को २१ बार नहीं १२१ बार गोहत्यारों से विहिन करने का प्रण लेता हूँ।'

फिर परशुरामजी अपने फरसे को धोती की कमर में डालकर विराटरूप में अपने यथा स्थान पर आसीन हो जाते हैं। यह सब देख पुजारी थर-थर काँप रहा है। उसने तो केवल सुन रखा था परशुरामजी के बारे में। आज अपनी आँखों से उसने सब देख लिया कि इनका परशु कितन खतरनाक है, उनके आगे कौन टिक सकता है। उसे बार-बार लग रहा था कि मेरी गर्दन अब गई के अब। एक तरफ पुजारी को श्रीकृष्ण का वह सौम्य रूप दिख रहा है जिसमें वे गायों के मध्य एक पेड़ की ओट लिये एक पाँव पर खड़े बंशी की उस मधुर धुन से सारे संसार को अपनी ओर बर्बस खींच रहे हैं, तो दूसरी तरफ उन्हीं का अवतार परशुराम। खून की नदियों बह रही है, कसाईयों के सिरों के ढ़ेर, चारों तरफ हाहाकार...।

गोभक्त रामसिंह

साभारः- गो अंक

.(लेखक- मुखिया श्रीविद्यासागर)

सबलगढ़ तहसीलके फाटकपर रहीम सिपाही बैठा था। तबतक भीतरसे रामसिंह सिपाही एक रोटी और उसीपर कुछ खीर रक्खे बाहर निकला।

रहीम- कहो रामसिंह! यह रोटी और खीर कहाँ लिये जा रहे हो?

रामसिंह- यह 'अग्रासन' है।

रहीम- इसके क्या मानी?

रामसिंह- हमलोग जब रोटी बनाते हैं, तब पहली रोटी 'गोमाता' के लिये ही बनाते हैं। उसको 'अग्रासन' कहा जाता है।

रहीम- तुम रोटी खा चुके?

रामसिंह- पहले गोमाताको खिला दूँगा तब कहीं मैं चौकेमें पैर रक्खूँगा।

रहीम- तुम गायको माता मानते हो?

रामसिंह- माता? माता नहीं-जगन्माता! तुम्हारे मुसल्मान-धर्ममें भी कहा है कि यह पृथ्वी गायके सींगपर रक्खी है।

रहीम- तुम्हारा इष्टदेव कौन है? तुम किसकी पूजा करते हो?

रामसिंह- मेरी इष्टदेवी गाय है। मैं गायकी ही पूजा करता हूँ। बैतरनीकी नाव वही है।

रहीम- आज तुम्हारी गो-भक्ति देखी जायगी।

रामसिंह- कैसे?

रहीम- तुम जानते हो कि आज ईद है?

रामसिंह- जानता हूँ। फिर?

रहीम- यह जानते हो कि इस समय तहसीलदार, नायब तहसीलदार, थानेदार, दीवान और कई सिपाही मुसल्मान हैं?

रामसिंह- यह भी जानता हूँ। फिर?

रहीम- इस तहसीलके अहातेमें ही थाना भी है-यह मालूम है?

रामसिंह- मालूम है। फिर?

रहीम- तहसील और थानेके बीचमें जो आँगन है, उसीमें आज गोकुशी की जायगी।

रामसिंह- किस समय?

रहीम- रातके बारह बजे।

रामसिंह- ग्यारह बजेसे मेरा पहरा है।

रहीम- तब तो तुम अपनी आँखोंसे, अपनी गोमाताको जबह होते देखोगे।

रामसिंह- यह बात सब अहलकारोंने पास कर दी है कि तहसीलमें गोकुशी हो?

रहीम- जी हाँ, ठाकुर साहब! सब अफसर मुसल्मान हैं। यह बात तय हो चुकी है।

रामसिंह- मेरे सामने गोकुशी हो, यह बात असम्भव है, नामुमकिन है रहीम।

रहीम- मैं खुद अपने हाथसे गायके गलेपर छुरी चलाऊँगा।

रामसिंह- मगर सिरपर कफन बाँधकर आना।

रहीम- देखूँगा कि तुम क्या करते हो।

(२)

रातके ग्यारह बजे रामसिंह सिपाही, वरदी पहनकर और हाथमें भरी हुई दुनाली लेकर, खजानेका पहरा देने लगा। वहाँपर बारह बंदूकें और भी रक्खी थीं। पाँच गारदके सिपाहियोंकी और सात थानेके सिपाहियोंकी। सभी भरी हुई थीं और दुनाली थीं।

आधा घंटे बाद, एक जवान और सुन्दर गायको लेकर, रहीम आया। उसने आँगनके एक खूँटेपर गाय बाँध दी और छुरीकी धार देखने लगा।

आँगनभरमें कुर्सियाँ बिछायी गयीं।

तहसीलदार, नायब तहसीलदार, थानेदार और दीवानजी आकर उन कुर्सियोंपर बैठ गये। शहरके कुछ धनी, मानी, रईस मुसल्मान भी आकर बैठ गये। सब लोग चौदहकी संख्यामें थे। सात मुसल्मान सिपाही पीछे खड़े थे। एक मौलवीन उठकर जबहकी दुआ पढ़ी। छुरी लेकर रहीम आगे बढ़ा।

(३)

रामसिंह- खबरदार रहीम! खबरदार!

रहीम- क्या बकते हो?

रामसिंह- चनेके धोखे मिर्च मत चबाना।

रहीम- चुप रहो।

रामसिंह- तहसीलदार साहब! यह तहसील केवल मुसल्मानोंकी तहसील नहीं है। इस तहसीलमे हिंदूलोगोंका भी साझा है।

तहसीलदार- इसका मतलब?

रामसिंह- मतलब यह कि तहसीलके भीतर गोकुशी नहीं हो सकती।

तहसीलदार- मेरा हुक्म है।

रामसिंह- आपका हुक्म कोई चीज नहीं। कलेक्टरका हुक्म दिखलाइये।

तहसीलदार- अपनी तहसीलका मैं ही कलक्टर हूँ। तहसील सबलगढ़का मैं जार्ज पंचम हूँ। समझे?

रामसिंह- चाहे आप साक्षात् खुदा ही क्यों न हों, पर मेरे सामने ऐसा हरगिज नहीं होगा।

थानेदार- होगा, होगा और बीच खेत होगा। हथियार रख दो और निकल जाओ तहसीलसे बाहर।

रामसिंह- मेरा हथियार कौन छीन सकता है?

थानेदार- मैं!

रामसिंह- आइये! छीनिये आकर!

दीवान- क्या तुम्हारी आफत आ गयी है रामसिंह! अपने अफसरसे, ऐसी नाजायत गुफ्तगू?

रामसिंह- अफसर? किस बेवकूफने इनको अफसर बनाया? पबलिकका दिल दुखाना अफसरका काम नहीं है।

थानेदार- रहीम! अपना काम करो। काफिरको बकने दो।

रहीमने गायके पास जाकर ज्यों ही छुरा ऊँचा किया, त्यों ही रामसिंहने दनूसे गोली चला दी। रहीम मरकर गिर पड़ा।

थानेदार- पकड़ो! पकड़ो!

रामसिंहने दूसरी गोली, थानेदारकी छातीपर रसीद की। हाय कहकर थानेदार भी वहीं ढेर हो गये।

तहसीलदार उठकर भागने लगे। रामसिंहने खाली बन्दूक वहीं डाल दी और लपककर दूसरी भरी दुनाली उठा ली।

रामसिंह- कहाँ चले जार्ज पंचम? जरा अपनी कलक्टरीकी चाशनी तो चख लो!

इतना कहकर रामसिंहने घोड़ा दबाया। तहसीलदारकी खोपड़ीमें गोली लगी और वे वहीं ढेर हो गये।

इसके बाद भगदड़ शुरू हुई। मगर रामसिंहको विराम कहाँ? तड़ातड़ गोली चल रही थी। निशाना अचूक था। ग्यारह आदमी जानसे मारे गये।

इसके बाद रामसिंहने गोमाताके चरण छुए और रस्सी खोल दी, वह बाहर भाग गयी। तब रामसिंहने एक गोली अपनी छातीमें मार ली और मरकर वहीं गिर पड़े!

सबेरा हुआ। सारा समाचार शहरमें फैल गया। हिंदू पबलिकने रामसिंहकी अरथी बनायी। एक सेठजीने लाशपर पाँच सौ रुपयेका दुशाला डाल दिया। चार साधुओंने लाशमें कंध

ाा लगाया। शहरके हलवाइयोंने बताशे जमा किये। सराफोंने पैसे और रेजगारी इकट्ठी की। माली लोगोंने फूल इकट्ठे किये। जब लाश चली, तो आगे-आगे वही कुर्बानीवाली गाय सजाकर चलायी गयी। पीछे शंख, घंटा और घड़ियालका नाद होने लगा। रास्तेमें फूल, बताशे पैसा और रेजगारी बरसायी जाने लगी। विराट जुलूस निकाला गया। कई-एक सहृदय मुसल्मान और ईसाई सज्जन भी साथ थे।

शमशानमें जब लाश उतारी गयी, तब मुहम्मदअली सौदागरने लाशपर गुलाबके फूल चढ़ाकर कहा-'हजरत मुहम्मद साहबने कुरान-शरीफमें लिखा है कि उन जानवरोंको हरगिज न मारा जाय, जो पबलिकको आराम पहुँचाते हैं। बादशाह अकबर और बादशाह जहाँगीरने, कानूर बनाकर गोकुशी बंद कर दी थी। अफसोस है कि हमारे तअस्सुबी मुसल्मान, सिर्फ हिंदू भाइयोंका दिल दुखानेकी गरजसे गोकुशी करते हैं। मैं उनपर लानत भेजता हूँ।'

पादरी यँग साहब ईसाई थे। उन्होंने कहा-'सरकार अगर गोकुशी कराती होती तो बिलायतमें खूब गोकुशी की जाती। मगर वहाँ इसका नामोनिशानतक नहीं है। बिलायतके सभी अंग्रेज किसान गायोंको पालते हैं। अफसोस है कि सिर्फ चमड़ेके व्यापारने गोकुशीका बुरा काम जारी कर रक्खा है। भाई रामसिंहकी बहादुरीकी मैं तारीफ करता हूँ। आप साहबानसे प्रार्थना करता हूँ कि ठाकुर रामसिंहके बाल-बच्चोंके वास्ते कुछ चंदा किया जाय।' उसी समय पंद्रह हजारका चंदा लिखा गया। उसमें मुहम्मदअलीने तीन हजार और पादरी साहबने एक हजार रुपये दिये।

यह घटना अक्षरशः सत्य है। केवल नाम बदल दिये गये हैं।

गोमूत्रमाहात्म्यम्

पं.गङ्गाधरजी पाठक श्रीधाम वृन्दावन

सनातन शास्त्रों में **'गोमूत्रे विद्यते गङ्गा', 'प्रस्रावे (गोमूत्रे) जाह्नवीजलम् '** (बृ०प०स्मृति **5।38**) गोमूत्र में गङ्गाजल विद्यमान है, आदि वचन प्रसिद्ध हैं । अनेक विधाओं से गङ्गाजल का परीक्षण करने के बाद यह सिद्ध हुआ है कि गङ्गाजल महामारी आदि के कीटाणुओं को दूर कर देता है और उदररोगों को नष्ट कर स्वास्थ्यवृद्धि करता है । गोमूत्र में गङ्गाजल के रहने से ये सारे गुण गोमूत्र में भी विद्यमान हैं ।

उपवास तथा पञ्चगव्य के उपयोग से उदर का शोधन हो जाने से शरीर एवं मन की शुद्धि हो जाती है । पुनः यकृत्, तिल्ली, खुजली, श्वेत-कुष्ठ, जलोदर, अभक्ष्यभक्षण, अस्पृश्यस्पर्शन एवं आभ्यन्तर मल को दूर करने में गोमूत्र की महिमा शास्त्रों में प्रसिद्ध है । भयङ्करतम शारीरिक रोगों को भी केवल गोमूत्र के उपयोग से ही दूर किया जा सकता है । गोमूत्र उदररोगों के लिये तथा श्वाँस, प्रमेह, मधुमेह, अजीर्ण तथा जलोदर के लिये अचूक औषध है । कुष्ठरोग और हृदयरोग के लिये तो यह रामबाण है । गर्म किये हुये गोमूत्र को कान में डालने से कान का बहना बन्द हो जाता है, गोमूत्र से आँखों के धोने से उनकी ज्योति वृद्धावस्था तक बनी रहती है ।

रघुवंश में नन्दिनी गाय के मूत्र से रघु को दिव्यदृष्टि की प्राप्ति प्रसिद्ध ही है । काली गाय के मूत्र को पन्द्रह दिन तक पीने से गले में सुन्दर स्वर उत्पन्न होता है । पेट के कीड़े गोमूत्र के पीने से मर जाते हैं; इसीलिये प्रसूता स्त्री के लिये गोमूत्र का पान महत्त्वपूर्ण बताया गया है । गोमय और गोमूत्र गाय का ही ग्रहण करे, वृषभ का नहीं । हिन्दुओं के सभी व्रत-उपवास आदि में कुशोदक युक्त गोबर-गोमूत्र से मिला हुआ गौओं का दूध, दही और घी पञ्चगव्य के रूप में प्रयुक्त होता है । भिन्न-भिन्न चिकित्सा के भेद से किसी विशिष्ट अनुभवी आयुर्वेदमनीषी के द्वारा गव्यपदार्थो के सेवन की शास्त्रीयविधा को जानकर उपयोग करने से निश्चित ही विशेष लाभ होता है ।

तीक्ष्णं चोष्णं क्षारमेवं कषायं
गौल्यं मेध्यं श्लेष्मवातं निहन्ति ।
भेद्यारक्तं पित्तशान्तिं करोति
गुल्मानाहोन्माददोषापहं च ।।
कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान्
गुल्मामवातगुदमारुतमूत्ररोधान् ।
कासं सकुष्ठजठरकृमिकोषजालं
गोमूत्रमेकमपिपीतमहो निहन्ति ।।

अर्थ- गोमूत्र तीक्ष्ण, गर्म, क्षार, कषेला, गौल्य (मधुमेह), मेधाजनक, कफ-वातनाशक, भेदक, रक्तपित्त को शान्त करने वाला तथा गुल्म (तिल्ली, यकृत, जिगर या लिवर की बीमारी), अनाह और उन्माददोष का नाशक है तथा किलास, मल, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदारोग, मूत्ररोध, खाँसी, कुष्ठ, उदररोग एवं कृमिसमूह का नाश करने वाला है ।

गोमयमाहात्म्यम्

महाभारत में जब लक्ष्मी जी ने गौओं से अपने निवास स्थान के बारे में याचना की थी तो गौओं ने कृपा कर के कहा था-

अवश्यं मानना कार्या
तवास्माभिर्यशस्विनि !
शकृन्मूत्रे वस त्वं
भो पुण्यमेतद्धि नः शुभे ।।

(अनु०प०82।24)

हे लक्ष्मि ! तुम हमारे अत्यन्त पवित्र एवं पुण्यप्रद मूत्र और गोबर में निवास करो; इससे तुम्हारी चञ्चलता भी दूर हो जायेगी और सत्पुरुषों में सम्मानित होओगी । इसे लक्ष्मी जी ने गौओं का विशिष्ट अनुग्रह माना और कहा था कि-

दिष्ट्या प्रसादो युष्माभिः कृतो मेऽनुग्रहात्मकः ।
एवं भवतु भद्रं वः पूजिताऽस्मि सुखप्रदा ।।

(अनु०प०82।25)

हे गौओ ! तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा की जिससे मैं सुखप्रद और सर्वपूजित हुई । तुम्हारा कल्याण हो । इस का तात्पर्य है कि भूमि की नष्ट होती उत्पादिका-शक्ति को पुनर्जीवित करने के लिये महर्षियों और वर्तमान वैज्ञानिकों के द्वारा भी यह सिद्ध किया जा चुका है कि गोमूत्र से सने गोबर को पृथिवी में डालने से पृथिवी की उत्पादिका-शक्ति बढ़ती है जो प्रत्यक्षतः सिद्ध है । इसी लिये तो गोबर से वृद्धि को प्राप्त हुये विकाररहित गेहूँ को संस्कृत में गोधूम कहा जाता है । गोबर के खाद से कपास की खेती सर्वोत्तम होती है ।

गेहूँ की वृद्धि से अन्न की वृद्धि तथा कपास की वृद्धि से वस्त्र की वृद्धि होने से हमारी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्त्ति होती है, इससे लक्ष्मी की प्राप्ति प्रत्यक्ष ही देखी जाती है; अतः **'गोमये वसते लक्ष्मीः'** यह उक्ति सुसिद्ध है ।

सबों ने गोबर को 'शुचि' असंक्रामक (नानकण्डक्टर) द्रव्यों में सर्वोत्तम स्वीकार किया है । प्रत्यक्ष देखा जाता है कि विद्युत् प्रवाह गोबर को पार कर के दूसरे द्रव्य में प्रवेश नहीं कर सकता । अनेक स्थानों में आकाश से गिरने वाली बिजली गोबर के ढ़ेर पर गिरने से वहीं समा जाती है । पूजन-भोजनादि पवित्र कर्मो में गोबर से चौका लगाने में भी यही वैज्ञानिकता है; अतः -

'लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमङ्गला ।
गोमयालेपनं तस्मात् कर्त्तव्यं पाण्डुनन्दन ।।'

(स्क.अव.रेवा.83।108)

अर्थ- गोबर में परम पवित्र सर्वमङ्गलमयी श्रीलक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं, इसलिये गोबर से लेपन करना चाहिये ।

वैज्ञानिकों के द्वारा भी यह सिद्ध किया जा चुका है कि गोमूत्र और गोबर में पोटाश, सोडा, मैगनेशिया, शोरा, चूना, लोहभस्म, गन्धक, फास्फोरस, एमोनिया आदि अनेक पदार्थो के तत्त्व मिश्रित होते हैं; जो उड़कर वायु को शुद्ध करते हैं । पोटाश विषहारक है, मल-मूत्र को शुद्ध करता है, जठराग्नि को प्रदीप्त करता है, उदररोग और शीतज्वर को दूर करता है । सोडा अन्न को पचाता है, मल की शुद्धि करता है । मैगनेशिया वात, पित्त, अम्ल, प्रमेह और रक्त-दोषों को दूर करता है, शरीर को बल प्रदान करता है क्योंकि यह अभ्रक का मूल तत्त्व है । चूना का पानी दूध के भारीपन को दूर कर साम्यावस्था में लाता है इसलिये माता के दूध के अभाव में शिशु के लिये चूनामिश्रित दूध देने से शिशु को अनपच सम्बन्धी विरेचन आदि दोष उत्पन्न नहीं हो पाता । लोह- भस्म वात, कफ, गुल्म, बवासीर, उदररोग और रक्तदोष को नष्ट करता है । इस प्रकार गन्धक तथा बालुकाद्रव्य फासफोरस, अमोनिया आदि पदार्थो में भी अनेक आश्चर्यजनक रोगनाशक दिव्य गुण विद्यमान हैं ।

गोबर में कई प्रकार के संक्रामक रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करने की क्षमता रखने वाले तैजस् (फास्फोरस) जैसे तत्त्वों की विद्यमानता प्रसिद्ध है । गोमूत्र में सने गोबर को शरीर में मलकर स्नान करने से खुजली मिट जाती है, शीतला के व्रण (घाव) में गोबर की भस्म लगाने से वह सूख जाता है, घृतयुक्त भस्म लगाने से व्रण की चिकित्सा हो जाती है । गेहूँ में गोबर की भस्म डालकर रखने से घुण के कीटाणु नहीं लगते हैं गोबर की अग्निहोत्रीय भस्म ललाट आदि स्थानों में लगाने से गोधूम आदि की तरह विशिष्ट मेधा आदि की उत्पत्ति होती है । सभी सत्कर्मो में पवित्र होकर अधिकार प्राप्ति के लिये दशविध स्नान में गोमूत्र और गोबर से भी स्नान का विधान बताया गया है । जिसका मन्त्र है -

अग्रमग्रं चरन्तीनामोषधीनां वने-वने ।
तासां वृषभपत्नीनां पवित्रं कायशोधनम् ।
तन्मे रोगाँश्च शोकाँश्च नुद गोमय सर्वदा ।।

शास्त्रों में प्रसिद्ध है । पञ्चगव्य में गोबर को पतले शुद्ध वस्त्र से सात बार छान कर मिलाना चाहिए । अदुग्धवती गौ भी भले ही दुग्धादि प्रदान न करे तथापि अतिशय पवित्र गोमूत्र और गोमय प्रदान करने के कारण अत्यन्त पूज्या होती ही है । प्रतिदिन वनों में घूमकर चरने वाली गौ के गव्य पदार्थ को ग्रहण करना चाहिए । शास्त्रों में गव्य पदार्थो का बृहद् वर्णन किया गया है ।

इन गव्य पदार्थो के विवेचन में श्रीसनातन-धर्मालोक, धर्म-दिग्दर्शन, भावप्रकाश, वाग्भट संहिता, सुश्रुत संहिता, चरक संहिता, माधव निदान, मदनपाल निघण्टु, शालिग्राम निघण्टु, निघण्टु रत्नाकर, महाभारत, वैदिक संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद् और स्वास्थ्य-रक्षा आदि ग्रन्थों का अपेक्षित सहयोग लिया गया है । सभी वैदिक संहिताओं में गव्य पदार्थ का वैशिष्ट्य बताने के लिए शताधिक वेदमन्त्र उपलब्ध हैं । जिज्ञासु पाठक अन्वेषण करें ।

संस्था समाचार

'' श्रीब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा'' वरिष्ठ धर्माचार्यों के सान्निध्य में 8 फरवरी , 2012 को वंशीवट (यमुना तट) पर होगी गो सभा। 9 फरवरी को यमुना महारानी के दिव्य एवं भव्य पूजन के साथ यात्रा का होगा शुभारम्भ।

फाल्गुन कृष्णपक्ष द्वितीया दिनांक 9 फरवरी, 2012 से चैत्र कृष्णपक्ष द्वितीया दिनांक 10 मार्च 2012 तक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज एवं मलूकपीठाधीश्वर द्वाराचार्य श्रीमंहत प.पू. श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज, पूज्य बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज सहित भारतवर्ष के अनेक गोभक्त महापुरूषों की पावन सन्निधि में ''श्री ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा'' का महान आयोजन प्रारम्भ होने जा रहा है।

हजारों गोपाल गोभक्त-भावुकों ने विधिवत पंजीयन करवाकर यात्रा में भाग लेने का संकल्प लिया है। देश के वरिष्ठ संत-महापुरूषों एवं धर्माचार्यों के सान्निध्य में यात्रा से पूर्व 8 फरवरी को मध्यान्ह 3 से 6बजे तक वंशीवट (यमुना तट) पर विशाल गोसभा का आयोजन होगा। 9 फरवरी को प्रातः 6 से 8 बजे तक यमुना महारानी का भव्य पूजन व यात्रा संकल्प के बाद यात्रा का शुभारम्भ होगा। ''ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा'' का संस्कार चैनल पर प्रतिदिन प्रातः 9 o 10 बजे के मध्य 8 फरवरी से 10 मार्च तक विशेष प्रसारण रहेगा।

उल्लेखनीय है कि ब्रज प्राणाराध्या श्रीश्यामा-श्याम की भी अराध्या पूज्या गोमाता के महातीर्थ रहे ब्रजधाम को पुनः गोपालन संस्कृति का प्रेरणास्त्रोत बनाने तथा गोसंरक्षण एवं संवर्धन के लिए जनमानस में व्यापक व प्रभावी चेतना जाग्रत करने हेतु परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज की पावन प्रेरणा से ब्रज के गोउपासक संतों एवं ब्रजवासी गोभक्तों द्वारा एक महान अनुष्ठान की भांति ''ब्रज गो अभ्यारण्य'' की स्थापना जड़खोर में हुई।

''श्रीब्रज चौरासी कोस यात्रा'' एक माह तक चलेगी। 9 फरवरी को श्रीधाम वृन्दावन से शुभारम्भ होकर लोहवन, अनन्दी- वनन्दी, दाऊजी, गोकुल (रमणरेती), मथुरा, मधुवन, कुदरवन, सतोहा-गणेशरा, कुसुम सरोवर, चन्द्र सरोवर, गोवर्धन, जतीपुरा, डीग, **ब्रज गोअभ्यारण्य जड़खोर**, आदिबद्री, केदारनाथ, बामवन, वरसाना, नन्दगांव, कोसीकलां, पैगांव, शेरगढ़, चीरघाट, बच्छवन (माँट) होते हुए 10 मार्च, 2012 को श्रीधाम वृन्दावन में ''ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा'' का भव्य समापन होगा।

ज्ञातव्य है कि यात्रा में शृंगारित 51 गोमाताएँ साथ-साथ चलेगी और लगातार गोमहिमा युक्त संकीर्तन जारी रहेगा। रात्रि

को गोमयी भजन संध्या एवं प्रवचन-संत्सग कार्यक्रम रहेंगे। यात्रा के मध्य विश्राम स्थलों जतीपुरा गोवर्धन में छप्पन भोग दर्शन होंगे और ''श्रीब्रज गो-अभ्यारण्य,जड़खोर'' में दो दिन का ठहराव रहेगा। यात्रा में बरसाना एवं नंदगांव में लट्ठमार होली के दर्शन भी किये जायेंगे। समापन पर श्रीधाम वृन्दावन मंदिर पर छप्पन भोग दर्शन और भव्य यमुनाजी की पूजा के कार्यक्रम रहेंगे। यात्रा प्रतिदिन प्रातः 7 से 12 बजे तक चलेगी, तद्पश्चात विश्राम स्थलों पर भोजन प्रसाद, निवास आदि सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ रहेगी।

ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा में महामण्डलेश्वर परम पूज्य कार्ष्णि श्रीगुरुशरणानन्दजी महाराज (श्रीरमणरेती), परम पूज्य गोस्वामी महोदय श्रीचिम्मनलालजी महाराजश्री (श्रीगोकुल), रसिक संत परम पूज्य श्रीरमेश बाबा महाराज (गहवरवन, श्रीबरसाना), महामण्डलेश्वर परम पूज्य श्रीज्ञानानन्दजी महाराज (श्रीकृष्णकृपा धाम, श्रीवृन्दावन), परम पूज्य श्रीमंहत स्वामी श्रीकिशोरदास देवजू महाराज (ठा. श्रीगोरीलाल कुंज, श्रीवृन्दावन), श्रीअग्रपीठाधीश्वर परम पूज्य श्रीराघावाचार्य जी महाराज (रैवासा धाम- राज), परम पूज्य श्रीकेशवानन्दजी ब्रह्मचारीजी महाराज (श्रीहनुमत्धाम, शुक्रतीर्थ), परम पूज्य श्रीगोपालशरण देवाचार्यजी महाराज (गोलोकधाम, श्रीवृन्दावन), परम पूज्य महन्तश्री रामप्रवेश दासजी महाराज (वाराहघाट, श्रीवृन्दावन), श्रीज्ञानानन्दजी महाराज, गोधाम पथमेड़ा, श्रीमहन्त श्रीमदनमोहनदासजी महाराज (श्री गोवर्धन), बाल व्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज (जोधपुर), पूज्य श्रीरसिया बाबा (श्री वृन्दावन) आदि सैंकड़ों संतवृन्दों का भी सान्निध्य रहेगा।

पावन यात्रा हेतु यात्रा के भाविकों से विशेष निवेदनः-

यात्रा में आने वाले सभी गोभक्तों से निवेदन है कि पूर्ण धर्म-अध्यात्म एवं भगवद् प्रेम भाव से ही यात्रा में शामिल हों तथा पूर्व में पंजीयन करवाकर ही पधारें। आचार-विचार, खान-पान में पूर्ण सात्विकता व शुद्धि रखें। प्लास्टिक व कचरा आदि का फैलाव नहीं करें और नशा-व्यसन से मुक्त रहते हुए अनुशासित भाव से यात्रा के सहभागी बने। यात्रीगण मँहगे आभूषण एवं अधिक मात्रा में नगदी लेकर नहीं आवे। आवश्यक नगदी को जमा करवाने हेतु साथ में बैंक की व्यवस्था रहेगी। यात्रीगण 7 फरवरी 2012 की रात्रि तक श्रीधाम वृन्दावन पहुँचने का प्रयास करें और पहुँचने की सूचना देते हुए पंजीयन क्रंमाक के आधार पर अपना परिचय पत्र अवश्य ले लेवें, इस हेतु दो पासपोर्ट साईज फोटों साथ में अवश्य लावें। सभी यात्री एक बक्सा, लोटा, बाल्टी, टार्च, बिस्तर, कम्बल, पहनने के गर्म कपड़े आदि साथ में लेकर पधारे।

कृपया पंजीयन कराके ही अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करें।

यात्रा सम्बन्धित समस्त सम्पर्कः- 07500830001] 2] 3] 4] 5] 09837036490] 09829014281] 09412551135 **पताः- श्रीमलूकपीठ वंशीवट, वृन्दावन।**

गो साहित्य सृजन हेतु विशेष निवेदनः- गो-लोकदेवताओं एवं अनुकरणीय गोभक्तों-गोसेवकों की जानकारी भेजें।

समस्त गोसेवक-गोभक्त पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आपके जिला, तहसील, पंचायत एवं गांव क्षैत्र में गोसेवा-गोरक्षा से जुड़े श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायी गोरक्षक लोक देवताओं तथा देवात्माओं जैसे कि झूंझार, भोमीया आदि की पूरी गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ जीवन चरित्र (जीवनी) एवं चित्र आदि सामग्री भेजें।

राजस्थान सहित भारतवर्ष की पावन धरा गोसेवा एवं गोभक्ति भाव से सदैव ओत-प्रोत रही हैं। सर्वत्र ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन को गोसेवा-गोरक्षा में सम्पूर्ण रूपसे न्यौछावर कर दिया। समाज के लिये ऐसे प्रेरणादायी गोसेवकों-गोरक्षकों की सम्पूर्ण जानकारी देश के लाखों-करोड़ों गोप्रेमियों को प्रमाणिक रूप से संग्रहित होकर उपलब्ध हो सके, ऐसा प्रयास है। इस हेतु शीघ्र ही समग्र साहित्य जिसमें गो-लोक देवताओं, गो-परम्पराओं एवं गोसेवा व गोरक्षा सम्बन्धित समस्त विशेष ऐतिहासिक एवं वर्तमान के व्यक्तित्वों पर साहित्य सृजन किया जा रहा है।

उपरोक्त सम्बन्ध में शीघ्रातिशीघ्र पत्र, ईमेल या फेक्स द्वारा प्रमाणिक जानकारी प्रेषित करें। अपने आस-पास से और स्वयं के जीवन में गोरक्षा-गोसेवा सबन्धित श्रेष्ठ अनुभव एवं चमत्कारिक अनुभुतियाँ को भी भेजें। सम्पर्कः- 9414154706, टेली. फेक्स - 02979 -287122 ई मेल. k.k.p.pathmeda@gmail.com

पूज्यश्री बालव्यासजी के गोसेवार्थ आगामी कार्यक्रमः-

परम गोवत्स प.पू. बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज के आगामी कुछ महिनों में निश्चित हो चुके गोसेवार्थ कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है। इन सभी कार्यक्रमों में परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज सहित अनेक वरिष्ठ संतवृन्दों का भी पावन सान्निध्य रहेगा।

ञ (१.) 2 से 4 मार्च, 2012 को श्रीराजकुमार काबराजी के संयोजकत्व में गोग्रास सेवा समिति हैदराबाद की और से आयोजित ''फाग महामहोत्सव''।

(२.) 1 से 3 अप्रेल, 2012 श्रीगोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा शाखा बाड़मेर गोसेवा समिति की और से आयोजित ''नानी बाई का मायरा''। कार्यक्रम के दौरान संतवृंदों का भी पावन सान्निध्य रहेगा।

(४.) 8 से 10 मई, 2012 गोसेवा समिति, नून (जालोर) द्वारा आयोजित ''नानी बाई का मायरा''। इस कार्यक्रम में संतवृंदों का पावन सान्निध्य भी रहेगा।

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों को लेकर गोसेवकों-गोभक्तों में उत्साह के साथ अभी से तैयारी के समाचार मिल रहे है। इन गोसेवार्थ आयोजनों में तन-मन-धन से सभी धर्मपरायण भक्त-भाविकों से निवेदन है कि बढ़-चढ़कर भाग लें एवं पुण्य अर्जित करें।

व्रत-पर्वोत्सव
भीष्माष्टमी

साभार :— व्रतपर्वोत्सव—अंक

माघमासके शुक्लपक्षकी अष्टमी 'भीष्माष्टमी' के नामसे प्रसिद्ध है। इसी तिथिको बाल ब्रह्मचारी भीष्मपितामहने सूर्यके उत्तरायण होनेपर अपने प्राण छोड़े थे। उनकी पावन स्मृतिमें यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन प्रत्येक हिन्दूको भीष्मपितामहके निमित्त कुश, तिल, जल लेकर तर्पण करना चाहिये, चाहे उसके माता-पिता जीवित ही क्यों न हों। इस व्रतके करनेसे मनुष्य सुन्दर और गुणवान् संतति प्राप्त करता है-

माघे मासि सिताष्टम्यां सतिलं भीष्मतर्पणम्।
श्राद्धं च ये नराः कुर्युस्ते स्युः सन्ततिभागिनः।।

महाभारतके अनुसार जो मनुष्य माघ शुक्ल अष्टमीको भीष्मके निमित्त तर्पण, जलदान आदि करता है, उसके वर्षभरके पाप नष्ट हो जाते हैं-

शुक्लाष्टम्यां तु माघस्य दद्याद् भीष्माय यो जलम्।
संवत्सरकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति।।

व्रत-विधि- इस दिन प्रातः नित्यकर्मसे निवृत्त होकर यदि सम्भव हो तो किसी पवित्र नदी या सरोवरके तटपर जाकर स्नान करना चाहिये। अन्यथा घरपर ही विधिपूर्वक स्नानकर भीष्मपितामहके निमित्त हाथमें तिल, जल आदि लेकर अपसव्य और दक्षिणाभिमुख होकर निम्नलिखित मन्त्रोंसे तर्पण करना चाहिये-

वैयघ्रपदगोत्राय सांकृत्यप्रवराय च।
गगांपुत्राय भीष्माय सर्वदा ब्रह्मचारिणे।।
भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
आभिरभ्दिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।।

इसके बाद पुनः सव्य होकर निम्न मन्त्रसे गंगापुत्र भीष्मको अर्घ्य देना चाहिये-

वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च।
अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।।

कथा- भीष्मपितामह हस्तिनापुरके राजा शान्तनुके पुत्र थे। देवनदी भागीरथी श्रीगंगाजी इनकी माता थी। बचपनमें इनका नाम देवव्रत था। इन्होंने देवगुरु बृहस्पतिसे शास्त्र तथा परशुरामजीसे अस्त्र-शस्त्रकी शिक्षा प्राप्त की थी। इनके समकालीन शस्त्र-शास्त्रका इनके-जैसा कोई ज्ञाता नहीं था। वीर होनेके साथ ही ये सदाचारी और धार्मिक थे। सब प्रकारसे योग्य देखकर महाराज शान्तनुने इन्हें युवराज घोषित कर दिया था।

एक बार महाराज शान्तनु शिकार खेलने गये थे। वहाँ उन्होंने मत्स्यगन्धा नामक एक निषादकन्याको देखा, जो पराशर ऋषिके वरदानसे अपूर्व लावण्यवती हो गयी थी। उसके शरीरसे कमलकी सुगन्ध निःसृत हो रही थी जो एक योजनतक जाती थी। महाराज शान्तनु उसके रूपलावण्यपर मुग्ध हो गये। उन्होंने उसके पिता निषादराजसे उस कन्याके लिये याचना की। निषादराजने शर्त रखी कि इस कन्यासे उत्पन्न पुत्र ही राज्यका अधिकारी हो।

राजा उदास हो गये, वे राजकुमार देवव्रतके अधिकारको छीनना अनुचित मानते थे, पर मत्स्यगन्धाको वे अपने हृदयसे निकाल नहीं सके। परिणामस्वरूप वे बीमार हो गये। राजकुमार देवव्रतको जब राजाकी बीमारी और उसका कारण पता चला तो वे निषादराजके पास गये और निषादराजसे कन्याको अपने पिताके लिये माँगा। निषादराजने अपनी शर्त राजकुमार देवव्रतके भी सामने रख दी। इसपर देवव्रतने कहा कि इस कन्यासे उत्पन्न होनेवाला पुत्र ही राज्यका अधिकारी होगा, मैं सत्यकी शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं राजसिंहासनपर नहीं बैठूँगा। इसपर निषादराजने कहा कि आप राज्यसिंहासनपर नहीं बैठेंगे, परंतु आपका पुत्र मेरे दौहित्रोंसे सिंहासन छीन सकता है। ऐसा सुनकर राजकुमार देवव्रतने सभी दिशाओं और देवताओंको साक्षी करके आजीवन ब्रह्मचारी रहने और विवाह न करनेकी भीषण प्रतिज्ञा की। इस भीषण प्रतिज्ञाके कारण ही उनका नाम 'भीष्म' पड़ा।

अपने पिताके सुखके लिये इतने बड़े व्रतको निभानेवाले आजीवन बालब्रह्मचारी भीष्मका चरित्र हम सबके लिये अनुकरणीय है। उनकी पुत्रहीन-अवस्थामें मृत्यु हुई, परंतु इनके अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रतके कारण सम्पूर्ण हिन्दूसमाज पुत्रकी भाँति इनका तर्पण करता है।

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(216)

सत्य-अहिंसा शील -क्षमता का
केन्द्र-बिन्दु है गोशाला
त्याग दया ममता समता का
क्षीर सिन्धु है गोशाला
जग की सारी विभूतियों की
प्रतिमा -सी गोमाता हैं
मानवीय मूल्यों का केवल एक अर्थ है
गोशाला.

(217)

काशी मथुरा पुरी अयोध्या
गंगाजल तुलसी माला
समस्त तीर्थो से दवों से
पावन है यह गोशाला
पावनता ही मूर्तिमयी हो
गोशाला में उतरी है
प्राणी -तनधारी प्रभु का मानो देवालय है
गोशाला.

(218)

गंगा यमुना सरस्वती के
संगम सी है गोशाला
सत्य शील कर्त्तव्य धर्म के
उद्गम सी है गोशाला
भारत माता ने ही गो का
दिव्यरूप अपनाया है
भारतीयता की भारत की ह्रदयस्थली है
गोशाला .

(219)

भूल गये होते यदि हम सब
राणा का उन्नत भाला
सती पद्मिनी के जौहर की
भूल गये होते ज्वाला
तो न शत्रुओं से लोहा ले
हम जीवित रह सकते थे
बीते बलिदानों की गाथा स्मरण कराती
गोशाला.

(221)

कोई मिलता नहीं हमारा
आज नाम लेने वाला
कर जाती उदरस्थ काल की
हमको भी निर्मम ज्वाला
क्यों होता अस्तित्व हमारा
रंगमंच पर दुनिया के
पिट जाते हम मिट जाते हम अगर न होती
गोशाला.

(222)

कितनी बार गगन पर छाया
संकट का बादल काला
कितनी बार उठी भारत में
युद्धों की भीषण ज्वाला
कहीं खो गये होते हम भी
काल-सिन्धु की लहरों में
नोका बनकर जो न बचाती हमें हमारी
गोशाला.

मासिक पत्रिका ''कामधेनु–कल्याण`` स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला`` के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला`` पथमेड़ा, पोस्ट–हाड़ेतर, तहसील–सांचौर, जिला–जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

श्रीगोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित, संचालित एवं प्रेरित गोशाला आश्रमों में संरक्षित गोवंश की संख्या

(1.)वृद्ध तथा कमजोर गायें - 37481 (2.) बीमार एवं विकलांग गायें -11416 (3.)नकार एवं कमजोर नंदी 10122
(4.) बीमार एवं विकलांग नंदी - 11195 (5.) छोटे वृषभ - 9646 (6.) स्वस्थ गायें, बैल एवं नंदी - 18967
(7.) छोटे बड़े बछड़े-बछड़ियाँ - 23633 तथा , वर्तमान में सभी शाखाओं में कुल गोवंश की संख्याः-122450 है।

विशेष नोटः- उपरोक्त लगभग 1 लाख 22 हजार 450 अनाश्रित गोवंश के अतिरिक्त पिछले वर्ष में अकाल से पीड़ित 1 लाख 80 हजार से अधिक निराश्रित गोवंश की प्रदेश के विभिन्न भागों में आपात गोसंरक्षण केन्द्र खोलकर सेवा-सुश्रुषा **जारी रही। बीते** वर्ष अच्छे मानसून के चलते स्वस्थ, गर्भस्थ एवं दुधारू गोवंश को राज्यभर में शिविरों व गोशालाओं से संतवृंदों के आह्वान पर सीधे किसानों को बड़ी संख्या में वितरित किया जा रहा था परन्तु अक्टुबर-नवम्बर 2010, में बेमौसमी अतिवृष्टि ने पूरे राज्य में घास-चारें को सड़ा-गला दिया, फलतः चहुँओर गोशालाओं में गोवंश बढ़ **गया** है। समय से पूर्व ही अकाल की भाँति आयी परिस्थितियों से विवश गोपालक अनुपयोगी गोवंश को निराश्रित छोड़ रहे हैं, जिन्हें भूख-प्यास एवं कसाईयों के क्रूर हाथों से बचाने का कार्य भी प्रदेशभर में पुनः युद्ध स्तर पर करना आवश्यक हो गया है। **जबकि वर्तमान वर्ष में सरकार से किसी भी प्रकार का अनुदान व सहयोग नहीं मिल रहा है।**

-: कार्यालय एवं कार्यकर्ताओं के सम्पर्क सूत्र :-

केन्द्रीय कार्यालय पथमेड़ा (02979) 287102,09 फैक्स 287122 मो. 7742093168, 9414131008, 9413373168, 9414152163
श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव (02975) 287341,42, 44, 9460717101, टे.फै. 02975-287343, 7742093200
दक्षिणांचल कार्या. बैंगलोर 08022343108 9449052168, 09829101008,09483520101
पश्चिमांचल मुख्यालय मुम्बई 02266393598,9702041008, 9969465325,9920871008
भायन्दर 9819772061,9029519779, 9324525247,9920871008
पूना 9372220347,9326960169,9029519779,9920871008
गोवा 7709587648, 9029519779, 9920871008
सूरत 9825130640, 9909914721, 9374538576, 9825572768, 9426106315, 0261.2369777
वापी 9427127906, 0260-2427475
चैन्नई 9884173998,9952077188,944057448,9445165901,9380570040
हैदराबाद 9440230491,9849007572,9849115851
अहमदाबाद 9426008540,9427320969,9824444049,9925019721,9374541460(079)25320652,
पंजाब 9814036249, 9417155533, 9815468646, 9417380950,9417601223
दिल्ली 9811284207, 9810165260, 9312227141, 9811985292
कोलकत्ता 9903016181, 9339355679
जोधपुर 9414145448,9414136210, 9414177119
अंकलेश्वर 9909946972, 9427101391,9825323694
जयपुर 0141-2299090,9929231144,9829067010, 9001000300, 9413369945
हरियाणा 9416050318, 9812019003,9812307929, 9829598216
भीलवाड़ा 9829045270, 9414113284
बालोतरा 02988-223873,9413503100, 9414107818, 9460889930
बनासकांठा 9426408451,9979565700,9898869898,9427044445,9924941000
बाड़मेर 9413308582, 9414106528, 9414106331

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजे।

RNI NO. RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2012-2014

संस्कार चैनल पर प्रतिदिन प्रातः 9 व 10 बजे के मध्य विशेष प्रसारण

श्री ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा

वरिष्ठ धर्माचार्यों के सान्निध्य में 8 फरवरी , 2012 को वंशीवट (यमुना तट) पर होगी गो सभा।

दिनांक 8 फरवरी, 2012 से 10 मार्च, 2012 तक

गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज की प्रेरणा व द्वाराचार्य श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रासजी महाराज की अध्यक्षता एवं भारत वर्ष के अनेक गोभक्त महापुरूषों की पावन सन्निधि में ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा- यात्रा

निवेदकः- श्री ब्रज गो-यात्रा समिति मलूकपीठ, वंशीवट, वृन्दावन (उ.प्र.)

सम्पर्क सूत्रः- 7500830001, 7500830002, 7500830003, 7500830004,7500830005

www.brijgauyatra.com Email. info@brijgauyatra.com

हैदराबाद शहर में पहली बार आयोजित

श्रीगोधाम महातीर्थ
आनन्दवन पथमेड़ा के सेवार्थ

श्री गोपाल फाग महोत्सव

वृन्दावन एवं स्थानीय कलाकारों द्वारा
ब्रज व मारवाड की प्रसिद्ध होरी का प्रस्तुतिकरण

दिनांक 2 मार्च से 4 मार्च 2012

समय रात्रि 7.00 बजे से 10.30 बजे तक

गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज के श्री मुख से मधुर होरी लीला के भजनों का गान

स्थल
गोशामहल पोलिस ग्राउण्ड, हैदराबाद

आयोजक
गोग्रास सेवा समिति, हैदराबाद

सम्पर्क सूत्रः- 9849015470, 9849467807, 9849011776